महाराज अपनी घुड़सालमें कभी कभी छ: सौसे अधिक घोड़े रखते थे। यह सब घोड़े ५४ से ६० फुट तक ऊंचे थे महाराज की सवारी पर्व्व त्योहारमें जब निकलती ५०० सुन्दर सवार साथ चलते। पहले मैंने इसी दृश्यको अनिर्वचनीय समझा था पर जब सैन्य व्यूह देखा तोमेरे छक्के छूट गये। इस व्यूहका वर्णन आगे होगा।

षष्ठ परिच्छेद।

अगर मैं इतना छोटा न होता तो मैं सानन्द उस देशमें बास करता। मेरी छुटाई देख वहांवाले ताना मारते और हंसते थे इस छुटाईके कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ा तथा नीचा देखना पड़ा। अपने अपमानका हाल अब मैं कुछ सुनाता हूं दाया मुझे छोटे पिञ्जरेमें अकसर बगीचे ले जाती थी। कभी पिञ्जरेसे निकाल कर हाथ पर ले लेती और कभी टहलनेके लिये मुझको रविशों पर छोड़ देती थी। एक दिन वामन राम भी हमारे साथ बगीचे गये थे। यह घटना उसके निकाले जानेके पहलेकी है। दायाने टहलनेके लिये मुझे छोड़ दिया। मैं टहलते टहलते सेवके पेड़ोंके नीचे जा पहुंचा। यह पेड़ भी ठुमके थे। मैंने जो बहलानेके लिये वामनसे जरा छेड़ छाड़की। वामनचन्द्रने भी मौका अच्छा देख सेवकी डालियोंको पकड़ कर जोरसे हिला दिया। फिर क्या था—लगे सेव मेरे सिर पर टपाटप गिरने सेव भी ऐसे वैसे न थे। बड़े बड़े पीपेकी बराबर एक एक सेवथा मैं उन फलोंकी चोटसे जमीनमें लेट गया। पर विशेष कुछ हानि नहीं हुई थी। वामनका कुसूर मैंने माफ करा दिया क्योंकि छेड़ खानी पहले मैंने की थी।

दूसरे दिन दायाने मुझे हरी हरी दूब पर खेलनेको छोड़ दिया और आप टहलती हुई कुछ दूर निकल गई। इतनेमें ओले गिरने लगे। ओलोंकी चोटसे मैं दस दिन तक बेकाम रहा। यह ओले अपने यहांके ओलोंसे १८०० गुना बड़े थे।

इस बगीचेमें सबसे भयानक घटना हुई सो सुनिये। मैं खेल रहा था और दाया दूसरी तरफ चली गई थी। इतनेमें मालीका एक उजला कुत्ता आया और मुझे मुँहमें उठा ले भागा अपने मालिकके सामने उसने आहिस्तेसे जमीन पर रख दिया। माली मुझे अच्छी तरह पहचानता था। वह महारानीके डरसे चटपट मुझको उठा कर दायाके पास ले आया। उधर दाया जब लौट कर आई तो मुझको न पाकर पुकारने और रोने लगी। मुझको सही सलामत पाया तो प्रसन्न हुई। मैं उस समय बेसुध सा था। महारानी सुन कर खफा होंगी इसलिये यह खबर वहीं दबादी गई। मैंने भी इस लज्जाजनक घटनाको प्रकाशित करना उचित नहीं समझा। एक दिन ऐसेही चील मुझ पर झपटी पर मैंने साहस करके तलवार निकाल ली फिर उसको घुमाता हुआ एक झुरमटमें जा छिपा। अगर मैं तलवार न निकालता तो चील जरूर उठा ले जाती। अब दाया मुझको अकेला नहीं छोड़ती थी। एक दिन मैं छछून्दरके बिलमें अकस्मात् गिर पड़ा। गले तक गड़प होगया। चोट तो विशेष नहीं लगी लेकिन कपड़े सब खराब होगये। एक बार एक घोंघेकी ठोकरसे मेरी पिण्डीकी हड्डी टूट गई थी।

और ज्यादे मैं क्या कहूं छोटी छोटी चिड़ियां भी मेरा अपमान करती थीं। वह सब निडर हो लापरवाहीके साथ मेरे आस पास फुदकती फिरती थीं। एक बार एक चिड़ियाने तो हाथसे रोटी छीन लीथी। मैं इनमेंसे किसीको पकड़नेके वास्ते हाथ बढ़ाता तो वह सब चोंच चलाती थीं। एक दफे मैं बड़ी वीरताके साथ एक चिड़ियाको लाठीसे मार कर दायाके पास ले चला। परन्तु अफसोस! लेनेके देने पड़ गये। वास्तवमें वह मरी नहीं थी लाठी की चोटसे बेहोश होगई थी। जब होशमें आई तो लगी पङ्ख फटफटा कर मेरी खबर लेने। अगर एक आदमी दौड़ कर मेरी मदद न करता तो वह जरूर उड़ जाती। यद्यपि यह उस

देशकी छोटीसे छोटी चिड़िया थी तथापि हमारे यहांके राजहंससे कहीं बड़ी थी।

महारानीकी सखियां देखने तथा छूनेके लिये मुझको अकसर अपने कमरोंमें बुलातीं। मैं दायाके सङ्ग तमाम जगह जाता था। स्त्रियां सब नङ्गा करके मुझको अपने अपने पेट पर सुलातीथीं। इन सबकी देहसे एक ऐसी गन्ध निकलती थी कि जिससे मेरी नाक फटती थी। यह कहनेसे मेरी श्रद्धा उन स्त्रियों पर जिन्हें मैं आदर की दृष्टिसे देखता हूं कम न समझना चाहिये। अस्तु देहकी गन्ध भला जैसे तैसे सह भी लेता था पर जब वह सुगन्ध द्रव्य लगातीं तो मैं वेहोश होजाता था। मैं समझता हूं मेरी छुटाईकी अपेक्षा मेरी इन्द्रियां बहुत तीक्ष्ण हैं। जैसे इन विराट जीवोंकी गन्ध मुझको सह्य नहीं वैसेही लिलीपटवालोंको मेरी नहीं थी। मैं बहुत सफाईसे रहता था तो भी उनकी नाकमें बदबू पहुँचही जाती थी। जो हो, महारानी तथा दायाकी देहसे विलायती बीबियोंकी तरह सुगन्ध निकलती थी।

सबसे दुःख मुझको इस बातका है कि यह औरतें मुझको नितान्त तुच्छ समझती थीं। मेरा लेहाज ख्याल परदा कुछ भी नहीं करती थीं। मेरे सामने नङ्गी देख कर कामोद्दीपनके बदले घृणा होती थी। मतली आती थी और डर लगता था। इनके चमड़े मोटे और रूखे तथा बाल मोटे और लम्बे थे। अधिक क्या कहूं इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग देख मैं घबरा जाता था। यह जो कुछ पीती थीं उसको मेरे सामने त्यागनेमें भी तनक नहीं लजाती थीं। इनमेंसे एक जो सबमें सुन्दर तथा जिसकी उमर १६ वर्षकी थी मुझको बहुत तङ्ग करती। कभी पकड़ कर मुझको अपनी छाती पर बिठा लेती और कभी न जाने क्या क्या करती। उन बातोंको दुहराना मैं अनुचित समझता हूं। उसके छछोरेपनसे ऊब कर मैंने उसके पास जानाही छोड़ दिया।

एक दिन हम लोग बध स्थानका तमाशा देखने गये। यद्यपि

यह दृश्य देखना पसन्द न था तथापि कौतूहल वश चलेही गये। वह मनुष्य जिसका बध होनेवाला था एक कुर्सी पर बैठा था। हत्यारेने एकही हाथमें उसकी गर्दन धड़से अलग करदी। फिर क्या था लगा रक्तका फुहारा छूटने लगा। सिर भी विकट शब्दके साथ भूमि पर गिर पड़ा। मैं आधा मील दूर रहने पर भी गरज सुन कर चौंक उठा था। एक बात कहनेको भूलही गया था वह यह कि हत्यारेकी तलवार चालीस फुट लम्बी थी।

घर बारको याद कर जब मैं उदास होता तो महारानी मेरे जी बहलानेकी चेष्टा करतीं समुद्र यात्राका प्रसङ्ग छेड़ कर उसकी सब बातें सुनती थीं। मेरे खेलनेके लिये एक छोटीसी नाव बननेकी आज्ञा हुई। कारीगरने मेरे कहनेके अनुसार नाव बना कर तैयार करदी। पाल पतवार इत्यादि भी बन कर ठीक होगये। उसमें मेरे जैसे आठ आदमी मजेमें बैठ सकते थे। महारानी उसे देख कर इतना प्रसन्न हुई कि हाथमें उठाये महाराजके पास दौड़ गई। महाराज भी नावकी छुटाई पर बहुतही खुश हुए। उसी समय उसको चलानेकी आज्ञा मुझको हुई। मैं किश्ती समेत पानीमें भरे हुए एक चहबच्चे में छोड़ दिया गया। जगह कमथी इससे अपना पूरा हुनर दिखला न सका। आखिर महारानीने काठका एक कठौता बनवाया। वह तीनसौ फुट लम्बा, पचास फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा था। वह खूब मजबूत बना हुआ था। वह पानीसे भर कर दीवारके सहारे भीतर कमरेमें रख दिया गया। मैला पानी निकाल देनेके लिये नीचे एक सूराख भी था। दो आदमी आसानीसे उसको पानीसे भर देते थे। बस इसीमें किश्तीको चला कर महारानीका तथा उनकी सहेलियोंका मनो-रञ्जन करता क्योंकि मुझमें इतनी सामर्थ्य न थी कि वहांकी नदियों में नाव चला लेता। जब मैं पाल तानता तो स्त्रियां अपने पङ्खोंसे उसमें हवा पहुंचातीं। जब वह थक जातीं तो उनके छोकड़े फूंकसे पाल उड़ा देते थे। और मैं कभी दायें कभी बायें इच्छानुसार

किश्तीको घुमाता था। जब खेल खतम होजाता तो दाया सूखने के लिये उसे खूँटीसे लटका देती थी।

एक दिन मैं मरते मरते बच गया। छोकड़ेने नौकाको जब कठौते में रख दिया तो दायाकी सखीने मुझे उसमें रखना चाहा। ज्योंही उसने उठाया मैं उसके हाथसे छूट गया। कुशल हुई मैं उसकी मालासे उलझ कर बच गया नहीं तो वहीं ढेर होजाता। इतनेमें दायाने आकर मुझे उबार लिया।

कठौतेका जल तीसरे दिन बदला जाता था। एक दिन नौकरों की असावधानीसे एक बड़ा मेड़क कठौतेमें घुस आया। फिर उछल कर नाव पर आरहा और एक ओर छिप गया। मुझे यह मालूम न था। ज्योंहीं मैं पहुंचा किश्ती डगमगाने लगी। मैं इधर उधर देख रहा था कि वह मेड़कानन्द कूद कर बीचमें आपहुंचे और फिर मेरे ऊपर नीचे चारों ओर कूदने लगे। स्वभावानुसार मेरे मुँह पर उसने मूत दिया। तमाम कपड़े भीग गये। लाचार होकर डांड़ उठाया और उसे मार भगाया। इतना बड़ा मेड़क मैंने कभी नहीं देखा था।

सबसे भारी विपद मेरे ऊपर जो आईथी जरा उसका हाल सुनिये। उसबार मेरे प्राण बचनेकी कोई आशा न थी परन्तु ईश्वरेच्छासे बचही गये। बात यों है—बावर्चीखानेके एक मुनशी के पास एक बन्दर था। दाया मुझे अपनी कोठरीमें बन्द करके कार्य्यवश कहीं चली गई थी। दिन गर्म्मीका था इससे खिड़कियां सब खुली छोड़ गई थी। इसके सिवा पिञ्जरेका द्वार तथा खिड़-कियां भी खुली थीं। मैं बैठा बैठा कुछ सोच रहा था। यकायक आहट सुन कर चौंक पड़ा। इधर उधर निगाह दौड़ाई तो देखा एक बन्दर कुलाचें मार रहा है। मैं बहुत डरा—उठनेकी हिम्मत न पड़ी। इस बीचमें बन्दर भगवान उछलते कूदते पिञ्जरेके निकट आपहुंचे। आप बड़े प्रेमसे पिञ्जरेको देखने लगे। हर एक खिड़की में ताक झांक करने लगे। मैं डरसे एक कोनेमें दब गया पर आप

कब माननेवाले थे? आप किलकारी मारते दांत निकालते इधर उधर ताक रहे थे। मैंने चाहा कि बिछौनेके भीतर छिप जाऊं लेकिन इतना समय कहां। ज्योंही उस बन्दरकी दृष्टि मुझ पर पड़ी उसने लपक कर कोटका दामन पकड़ लिया। मैंने भी जरा अपना जोर दिखाया पर कुछ लाभ न देख चुप होगया। आखिर वह मुझे बाहर खेंच लाया। मां जैसे लड़केको दूध पिलाती है ठीक वैसेही उसने अपने दायें हाथसे मुझे पकड़ लिया। मैंने फिर जोर किया तो उसने ऐसा दबाया कि मैं एक दम बेकाबू होगया। शेषमें मैंने कुछ छेड़छाड़ न करनाही उचित और उत्तम समझा। शायद उसने बन्दरका बच्चाही समझ कर मुझे गोदमें लिया था क्योंकि वह दूसरे हाथसे मेरा मुंह धीरे धीरे मसलता था। उसी समय दरवाजा खुलनेकी आहट हुई। बस वह उछल कर खिड़की पर जा धमका। वहांसे एकही छलाङ्गमें शीशेके छप्पर पर और फिर वहांसे परनाले परसे होता हुआ पड़ौसकी छतपर जा पहुंचा। एक हाथसे मुझे बराबर पकड़े था। मैंने दायाको चिल्लाते हुए सुना। वह बिचारी चिल्लाते चिल्लाते परेशान होगई थी। फिर तो तमाम महलमें कुहराम मच गया। नौकर चाकर अस्तव्यस्त हो इधर उधर दौड़ने लगे। इधर मुड़ेरेके ऊपर बैठ कर बन्दरराम मुझे खिला रहे थे। मैं नहीं खाता तो वह चपत लगाता था। बहुतोंने पत्थर मार कर बन्दरको भगाना चाहा। परन्तु वह सब रोके गये नहीं तो मेरी खोपड़ी जरूर उड़ जाती।

आखिर सीढ़ियां लगाई गईं। कई आदमी ऊपर चढ़ने लगे। बन्दरने यह सब मामला देख कर मुझे वहीं छोड़ा और आप नौ दो ग्यारह हुआ। मैं पांचसौ गज ऊंची छत पर कुछ देर तक बैठा रहा। और भला क्या करता डरके मारे कलेजा कांप रहा था। यही मालूम होता था कि अब हवाने नीचे धकेला अब मैं गिरा। इतनेमें एक छोकरा मेरे पास पहुंचा। वह अपने पतलूनकी जेबमें रख कर कुशल पूर्वक नीचे ले आया।

बन्दरने न जाने क्या क्या मेरे मुँहमें भर दिया था इससे कण्ठ बन्द था—बोलनेकी सामर्थ्य न थी। दायाने सूईकी नोंकसे मेरा मुँह साफ कर दिया। वमन होनेसे चित्त ठिकाने हुआ। कमजोरी इतनी थी कि दो सप्ताह चारपाई पर पड़ा रहा। उस कपिने इतने जोरसे दबाया था कि दर्दसे हड्डियां टूटती थीं। महाराज महारानी मुझे देखनेके लिये बारम्बार आते थे। वह बन्दर जो मुझे लेभागा था मारा गया। महाराजने आज्ञादी कि अबसे ऐसे जानवर महलमें कोई न रक्खे।

मैं चङ्गा होकर जब महाराजको उनकी कृपाका धन्यवाद देने के लिये दरबारमें गया तो श्रीमान्‌ने पूछा "जब तुम बन्दरके हाथ में थे तब क्या सोचतेथे ? उसका खिलाना तुम्हें कैसा मालूम हुआ? वह खाना तुम्हें पसन्द आया या नहीं ? छत परकी ठंढी हवाने तुम्हारी भूख बढ़ाई या नहीं ? तुम्हारे देशमें अगर बन्दर तुम्हें पकड़ लेता तो तुम क्या करते ?" मैंने कहा "श्रीमान् ! अव्वल तो हमारे देशमें बन्दर नहीं हैं जो हैं भी सो दूसरे देशसे तमाशेके लिये आये हैं। दूसरे यह इतने छोटे होते हैं कि एक दर्जन बन्दरसे मैं मजेमें मुकाबला कर सकता हूं। और यह बन्दर तो जो मुझे पकड़ लेगया था हमारे देशके हाथीके बराबर था। इसको देखतेही मेरे देवता कूच कर गये थे। अगर मैं होशमें रहता तो जरूर अपने खञ्जरसे उसे मार भगाता।" यह सब बातें मैंने बड़ी वीरतासे कहीं। मेरी बात सुन कर सब कहकहा मार कर हंस पड़े। मैं अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हुआ। वास्तव में जो अपनेसे बहुत बड़े हैं उनसे घमण्ड क्या ! लेकिन विलायतमें यह बात नहीं है। वहां मैंने देखा है कि अदनासे अदना भी बड़ोंके साथ टांगे अड़ाता है।

एक दिन गोबरके ढेरको देख कर उसके फांदनेकी इच्छा हुई। ज्योंहीं फांदने लगा गड़ापसे घुटने तक उसमें डूब गया। यह दिल्लगी सुन कर भी सब कोई खूब हंसतेथे। मतलब यह कि कुछ दिन तक मैंहीं दरबारका विदूषक हो पड़ा था।

सप्तम परिच्छेद।

मैं राजदरबारमें हफ्तेमें दो बार जाता था। महाराजको अक्सर बाल बनवातेही पाता था। छुरा मामूली तलवारसे दूना लम्बा था। देशकी परिपाटीके अनुसार महाराज सप्ताहमें दो बार बाल बनवाते थे। मैंने नाईसे बड़े बड़े चालीस पचास बाल चुनवा कर ले लिये। इन बालोंकी मैंने एक कंघी बनाई मेरी कंघी टूट गई थी। इसीसे काम निकालता था। महारानी जब बाल झाड़तीं तो उनके बाल टूटते थे। मैंने सब को बीन बीन कर जमा किया। फिर दो कुर्सियां इन्हींबालोंसे बना डालीं। यह दोनों कुर्सियां महारानीको अर्पण कीं। महारानीने उन्हें अपने कमरेमें रक्खा उन्होंने कई बार मुझे उन पर बैठनेके लिये कहा पर मैं नहीं बैठा। मैंने सोचा जो बाल एक समय महारानीके सिरकी शोभा बढ़ातेथे उन पर बैठना उचित नहीं। महारानीके बालसे मैंने एक बटुआ भी बनाया था। इस पर महारानीका नाम सुनहले अक्षरोंमें लिखा था। यह बटुआ महारानीकी इच्छानुसार मैंने दायाको दिया। यह बटुआ केवल देखनेहीका था। इसी लिये वह इसमें छोटे छोटे हलके सिक्कोंको छोड़ और कुछ नहीं रखती थी।

महाराज गाने बजानेके अच्छे प्रेमी थे। वहां प्राय: गाने बजानेकी चर्चा होती थी। मैं भी कभी कभी बुलाया जाता था। मैं मेज़ पर पिञ्जरेमें बैठ कर गाना सुनता था। उस गानेमें इतना शोर गुल होता कि सुर ताल कुछ भी समझ न पड़ती थी। अगर हमारे यहांके बहुतसे ढोल और भोंपो इकट्ठे करके बजाये जावें तो भी उस गुल गपाड़ेके बराबर न हों। पिञ्जरेको गानेवालोंसे दूर रखवाता और सब किवाड़ बन्द कर लेता तब उनका गाना कुछ बुरा मालूम नहीं होता था।

मैंने सितार बजाना भी लड़कपनमें कुछ सीख लियाथा। दायाके पास भी एक बाजा था। इसकी बनावट ठीक सितारसी थी

इस लिये मैं उससे भी सितारही कहता। एक उस्ताद हफ़्तेमें दो बार आकर दायाको सितार सिखला जाता था। मैंने सोचा मैं भी एक दिन सितार बजाकर महाराज और महारानीको प्रसन्न करूं। पर मेरे योग्य सितार कहां? दायाका था सो ६० फुट लम्बा और उसकी सुन्दरियां एक एक गजके फासले पर थीं। ऐसा सितार मैं क्या मेरे लड़कदादा भी बजा सकते नहीं। निदान मैंने महाराजके कारीगरोंसे एक सितार नहीं सितारी बनवाई। उसीको दरबारमें मैंने बजाया। सब सुन कर बहुतही प्रसन्न हुए।

मैं पहलेही लिख चुका हूं कि महाराजकी समझ अच्छी थी। वह प्रायः मुझे पिञ्जरे समेत बुलवाते थे। पिञ्जरा मेज पर रक्खा जाता था। मैं श्रीमान्के आज्ञानुसार कुर्सी निकाल कर श्रीमान्से तीन गजके फासले पर पिञ्जरेके ऊपर बैठताथा। बैठनेसे श्रीमान्के श्रीमुखके कुछ कुछ बराबर होजाता था। एक दिन साहस करके मैंने कहा "महाराज! उस दिन श्रीमानने युरोपके तथा अन्यान्य देशके राजाओं पर जैसी घृणा प्रकटकी थी वह श्रीमान् जैसे गुणवान पुरुषको शोभा नहीं देती। शरीर बड़ा होनेसे बुद्धि भी बड़ी होगी यह सोचना ठीक नहीं। हमारे देशमें तो जो अधिक लम्बा होता है वही मूर्ख कहलाता है। पशु पक्षी कीड़े मकोड़ोंमें भी यही बात है—चिउंटी मधु मक्खियां प्रभृति और कीड़ोंकी अपेक्षा अधिक परिश्रमी शिल्पी तथा सुघड़ होती हैं। श्रीमान् चाहे मुझे जितनाही क्षुद्र क्यों न समझते हों परन्तु मेरी इच्छा यही है कि मैं श्रीमान्की किसी विशेष सेनामें आऊं और कुछ उपकार विशेष करूं। महाराजने बड़े ध्यानसे मेरी बातें सुनी और उसी दिनसे वह मुझे पहलेकी अपेक्षा अच्छी दृष्टिसे देखने लगे। महाराज बोले "अच्छा तुम अपने देशकी सच्ची सच्ची सब बातें कह सुनाओ। अन्यान्य राजाओंकी रीति नीति भी सुन लेना चाहिये। अगर कोई अच्छी बात सुननेमें आवेगी तो उसे ग्रहण कर अपने राज्यका उपकार करूंगा।"

प्रिय पाठकगण! प्यारी जन्मभूमिकी प्रकृति प्रशंसा करनेके समय डिमस्थिनीज या सिसिरो (प्रसिद्धवक्ता) की वाग्शक्ति मेरी जिह्वामें आजाय यह इच्छा मेरे मनमें कितनी बार हुई थी सो आपही विचार कर देखें !

मैंने यों कहना आरम्भ किया "हमारा देश दो टापुओंके मेलसे बना है। इसके तीन बड़े बड़े हिस्से हैं। यह समस्त एक राजा के अधिकारमें हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिकामें भी हम लोगोंके उपनिवेश हैं। हमारे देशकी भूमि उपजाऊ तथा जल वायु सुन्दर है। पार्लियामेण्ट नामकी वहां एक बड़ी सभा है। इस सभामें दो दल हैं। एकका नाम है "हाउस आफ लार्ड्स" और दूसरेका "हाउस आफ कामन्स" पहले दलमें पुराने घरानेके प्रतिष्ठित कुलीन लोग हैं। युद्ध विद्या और कला कुशलताकी असाधारण परीक्षा देकर यह लोग राजा और राज्यके मन्त्री, व्यवस्थापकसभा के सभ्य तथा उस उच्च न्यायालयके विचारकर्त्ता नियुक्त होते हैं जिसकी फिर अपील नहीं। सचाई, सदाचार और साहसके साथ स्वदेश तथा राजाकी रक्षाके निमित्त सदा प्रस्तुत रहते हैं। यही लोग देशके सच्चे गौरव और रक्षक हैं। यह लकीरके फकीर हैं। इनमें कितनेही पवित्रात्मा भी हैं जो विषय यानी धर्म्माध्यक्ष कहलाते हैं। धर्म्म और धर्म्मोपदेष्टाओंका तत्वावधान करनाही इनका कर्त्तव्य है। पादरियोंमें जो सबसे पवित्रात्मा और विद्वान होता है वही विशप बनाया जाता है। वास्तवमें यही सबके गुरु हैं।

"दूसरे दलमें देशके मुख्य मुख्य भलेमानस हैं। यह स्वेच्छा पूर्वक अथवा देशवसियोंके द्वारा मनोनीत होकर सभ्य होते हैं। सुयोग्य और देशानुरागी लोगही सबकी ओरसे प्रतिनिधि बनाये जाते हैं। यही दोनों दल इङ्गलैण्डकी स्वाधीनता और शासन प्रणालीके मुख्य अङ्ग हैं। यही दोनों दलवाले राजाके सङ्ग बैठकर आईन कानून भी बनाते हैं।

इसके उपरान्त मैंने कहा कि प्रजागणके स्वत्व तथा शान्ति रक्षा के निमित्त विचारालय हैं। आईन कानूनके जाननेवाले लोग इन सब विचारालयोंमें विचारपतिका आसन ग्रहणकर लड़ाई झगड़ेका निबटेरा करते तथा भले आदमियोंकी रक्षाके लिये अत्याचारियोंको दण्ड देते हैं। हमारे राजकोषका प्रबन्ध दूरदर्शितासे पूर्ण है। जल और थल दोनोंही राहसे शत्रुओंके दांत खट्टे करनेमें हमारी सेनाका खूब लाभ है। हमारे यहां लाखों मनुष्य स्वच्छन्दता पूर्वक बास करते हैं और सब न्यारे न्यारे मतके हैं। राजनीति जानने वालोंका भी एक दल अलग है।

इसके सिवा मैंने उन खेल तमाशोंका भी बखान किया जिनसे हमारे प्यारे देशको नामवरी बढ़ सकती थी। सौ वर्ष पहलेका इतिहास भी मैंने संक्षेपसे कह सुनाया।

पांच दिनमें मैंने इस कथाको पूरा किया था। प्रति दिन कई घण्टे तक कथा होती थी। महाराज बड़े ध्यानसे सुनते थे। जो विषय अच्छे जान पड़ते थे अथवा जिनके बारेमें कुछ पूछना था उन सबको महाराज एक पोथीमें लिखते जाते थे। पाठकगण! मैंने अपने व्याख्यानका केवल सारांश यहां लिखा है वहां तो खूब लम्बी चौड़ी वक्तृता दी थी।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तब छठे दिन महाराजने पोथी देख कर कई प्रश्न किये और अपना सन्देह मिटाया। आपने पूछा "तुम्हारे देशके बड़े आदमियोंके लड़कोंको मानसिक और शारीरिक उन्नतिके लिये कौन कौन उपाय किये जाते हैं? लड़के अपनी पहली तथा पढ़नेवाली उमरमें किस प्रकार समय बिताते हैं? जब कोई सद्वंश विलुप्त होजाता है तब उस अभावको पूर्ण करनेके लिये क्या किया जाता है? नये लौर्ड बननेके लिये किन गुणोंकी आवश्यकता है? लौर्ड बननेके लिये राजाकी खुशामद तो नहीं करनी पड़ती है—रानीको सखियोंको या प्रधान मन्त्रीको रुपये तो देने नहीं पड़ते हैं अथवा सर्वसाधारणकी बुराई चाहने

वाले किसी दलकी वृद्धिकी आवश्यकता तो नहीं पड़ती है ? इन लौर्डोंको अपने देशके कानूनका कितना ज्ञान रहता है ? अड़ोसी पड़ोसीकी जमीन जायदादका झगड़ा निबटानेके लिये जितने ज्ञान का प्रयोजन होता है उतना यह किस प्रकार अर्ज्जन करते हैं। क्या यह लोग सदा निर्लोभ रहते और कभी पक्षपात नहीं करते हैं ? क्या आवश्यकता होने पर भी कभी कोई घूस वगैरः नहीं लेता है ? जिन पादड़ियोंकी बात तुमने कही क्या वह सब केवल धर्म्म ज्ञान और सद्व्यवहारही के कारण पार्लियामेण्टके मेम्बर होते हैं ? क्या मेम्बर होनेके पहले इन पादरियोंको समयके अनुसार व्यवस्था देनेकी आदत नहीं रहती है ? और जब यह साधारण पादरी थे उस समय भी क्या किसी बड़े आदमीके टुकड़े तोड़ कर उसकी हां में हां नहीं मिलाते थे ? अगर मिलाते थे तो मेम्बर होने पर फिर उस बड़े आदमीकी खुशामद करते हैं या नहीं ?

"हाउस आफ कामन्सके सभ्य चुने जानेका क्या नियम है ? रुपयेवाले विदेशी रुपयोंके जोरसे धनहीन गंवारोंसे "वोट" संग्रह कर सभ्य होजाते हैं या बुद्धिमान देशवासीही चुने जाते हैं ? जिस काममें कुछ तलब तनखाह नहीं उसके लिये लोग इतना ललचाते क्यों हैं ? इस बेगारके लिये इतनी हाय हाय क्यों ? अपना सर्व्वस्व नष्ट करके इस सभामें घुसनेके वास्ते लोग इतना क्यों मरते हैं ? ऐसे परोपकारमें सत्यका अभाव प्रतीत होता है। क्या इन महो-त्साही महात्माओंको घूंसखोर मन्त्रीके मेलसे मन्द बुद्धि और अत्या-चारी राजाकी ठकुरसुहातीके लिये प्रजामात्रकी बुराई करके अपने खर्च और मेहनतके बदलेमें धन मूसनेका कुछ ख्याल तो नहीं रहता है ?" और भी बहुतसे प्रश्न महाराजने किये थे जिनका उल्लेख मैं यहां उचित नहीं समझता हूं।

फिर महाराजने अदालतोंका प्रसङ्ग छेड़ा। इस विषयको मैं अच्छी तरह समझा सकताहूं क्योंकि एक बार मैं भी मुकद्दमा लड़ चुका हूं। पहले अपना सब ख्वाहा किया पीछे खर्च समेत डिग्री

मिली। महाराजने कहा "न्यायान्याय विचारनेमें किनता समय तथा कितने रुपये लगते है? झूठे बनावटी मुकद्दमेमें वकील बारि· ष्टर स्वाधीनता पूर्वक बहस कर सकते हैं या नहीं? न्यायकी तराजू में धर्म्म या राजनीति सम्प्रदायके लोगोंका कुछ बोझ है या नहीं? इन वकील बारिष्टरोंको न्यायका साधारण ज्ञान है या केवल प्रादे- शिक, जातीय और स्थानीय व्यवहारोंहीका? वकील या जज जिस कानूनके अनुसार बहस या विचार करते हैं उसके बनानेका उन्हें कुछ अधिकार है या नहीं? वकील वारिष्टरगण एक बार जिस विषयको बहस करके मण्डन कर चुके हैं मौका पड़ने पर फिर उसीको खण्डन करनेके लिये नजीर पेश करते हैं या नहीं? विशेषत: यह कभी हाउस आफ कमन्सके मेम्बर होतेहैं या नहीं?"

अब खजानेकी बारी आई। मैंने कहा था कि हमारे यहां प्राय: पचास लाख पाउण्ड सालमें टेक्सके आते हैं। परन्तु महाराज को मेरी बातका विश्वास नहीं हुआ। जब मैंने टेक्सोंके नाम गिनाये तो पचासके दूने सौ लाखकी नौबत पहुंची। तब आपसे चुप न रहा गया। आप बोल उठे "तुम्हारी रीति नीतसे हमारे राज्यको लाभ पहुँच सकता है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इतनी आमदनी होने पर भी तुम्हारे राजा मामूली आदमियोंकी तरह ऋण ग्रस्त क्यों होजाते हैं? तुम लोगोंके महाजन कौन हैं? देना चुकानेके लिये तुम लोग कहांसे रुपये पाते हो? तुम्हारे यहां अक- सर युद्ध होताहै और उसमें बहुत खर्च पड़ताहै। इससे मालूम होता है कि तुम लोग बड़े झगड़ालू हो। सेनापति तो राजासे अधिक धनवान होते होंगे? व्यापार, सन्धि अथवा सीमा रक्षाके सिवा तुम्हें अपने टापूसे बाहर जानेका क्या काम है? शान्तिके समय भी सेना रखके व्यर्थ खर्च बढ़ानेसे क्या लाभ? जहांके मनुष्य स्वाधीन हैं वहां तलब देकर सेना रखनेकी क्या दरकार है? अगर तुम लोगोंकी मरजीके मुताबिक राजा शासन करता है तो फिर डर किसका? किससे लड़नेके लिये फौज रखते हो? क्या गृहस्थ लोग

अपने अपने घरकी रक्षा बालबच्चोंके साथ मिल कर उन लुच्चोंसे जो दूसरोंके गले पर छुरी चला कर रुपया पैदा करते हैं अच्छी तरह नहीं कर सकते हैं? बाजारू चौकीदारोंकी अपेक्षा अपनी रक्षा आप कहीं अच्छी होगी।"

हमारे यहांके गणितको सुन कर महाराज बहुत हंसे। हमारे गणितको वह अनूठा बतलाते थे। सबसे अचरज तो उन्हें यह सुन कर हुआ कि विलायतमें मनुष्य गणना राजनैतिक धार्म्मिक आदि सम्प्रदायोंको गिन कर पूरी होजाती है। आपने यह भी कथन किया कि जिन लोगोंकी राय सबको हानि पहुँचानेवाली है वह लोग अपनी अपनी राय बदलनेके बदले उसे छिपाके क्यों नहीं रखते हैं? विष बाजारमें बेचनेसे हानि है कुछ घरमें छिपा कर रखनेसे नहीं। अगर राजा राय बदलनेके लिये लोगोंको लाचार करेगा, तो उसका अन्याय और यदि छिपानेके लिये नहीं कहेगा तो निर्बलता प्रगट होगी। अतएव सबको अपनी अपनी राय छिपा कर रखना चाहिये।

मैंने कहा था कि हमारे देशमें बड़े आदमी आमोद प्रमोदके लिये जुआ खेलते हैं। इस पर महाराजने पूछा "किस उमरके लोग जुआ खेलते हैं और कब छोड़ देते हैं? कितना समय इस काममें लगाया जाता है? क्या जुएमें कभी कोई अपना सारा धन नष्ट नहीं कर देता है? नीच जातिके जुआरी धन पैदा करके बड़े आदमियोंको अधीन कर लेते हैं या नहीं? बुरी सङ्गतमें उन्हें खेंच लाते हैं या नहीं—मानसिक उन्नतिसे उन्हें विमुख कर देते हैं या नहीं? जो बड़े आदमी जुआ खेल कर दरिद्र होजाते हैं क्या वह फिर दूसरों पर हाथ साफ नहीं करते हैं?"

गत सौ वर्षका इतिहास मैंने कह सुनाया तो महाराजको बहुतही आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा "क्या तुम्हारे देशमें केवल षड़यन्त्र, विद्रोह, खून खराबी, नरबलि, समाजविप्लव, देशनिकाला, इत्यादि भरा हुआहै? यह सब तो लोभ, विवाद, कपटता,

विश्वासघात, नृशंसता, क्रोध, पागलपन, घृणा, ईर्षा, द्रोह, विषय वासना, और उच्चभिलाषाहीके फल हैं।"

दूसरे दिन महाराजने बड़े श्रमसे मेरे व्याख्यानके सार भागको कह सुनाया और अपने प्रश्नोंको मेरे उत्तरसे मिलाया। फिर हाथमें मुझे लेकर धीरे धीरे पीठ ठोंकते हुए श्रीमान्ने प्यारसे जो कुछ कहा था सो आज तक मैं नहीं भूला हूं। आपने कहा "ऐ मेरे नन्हे मित्र! तूने अपने देशकी बहुत सुन्दर प्रशंसा सुनाई। तेरे कहनेसे मुझे अब अच्छी तरह मालूम होगया कि व्यवस्थापक होनेके लिये मूर्खता, सुस्ती और पापाचरणकी बहुत जरूरत है। जो कानूनको उलट पलट करने, बिगाड़ने और बालकी खाल निकालनेमें निपुण होते हैं वही तुम्हारे यहां आईनकी व्याख्या, वक्तृता तथा उसके अनुकूल काम भली भांति कर सकतेहैं यह मुझे अब मालूम हुआ। तुम्हारे यहांकी कोई कोई बातें पहले तो अच्छी थीं पर अत्याचारके कारण धीरे धीरे मिटती जातीं हैं और बहुतसी तो एक दम लुप्त होगईं। जो कुछ तूने कहा उससे प्रगट होता है कि विलायतवाले किसी विषयमें पूर्णता प्राप्त करना नहीं जानते और यह तो जानतेही नहीं कि मनुष्य अपने गुणहीके प्रतापसे बड़े होते, पादरी दया और ज्ञानसे बढ़ते, सिपाही आचरण और साहससे विख्यात होते, जज न्यायसे यशके भागी होते, व्यवस्थापक देशानुरागसे तथा राजमन्त्री बुद्धिमानीसे प्रख्यात होते हैं। तूने अपना सारा समय देशाटनहीमें बितायाहै इसलिये शायद तू अपने देशके बहुतसे पापोंसे बचा होगा। जो कुछ तूने कहा और जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे मालूम होगया कि तुम लोग बड़े भयानक विषैले कीड़े हो। संसारमें ऐसे कीड़े और नहीं होंगे"।

अष्टम परिच्छेद।

मैं नितान्त सच्चा हूं इसीसे यह सब बातें लिखी हैं अन्यथा कदापि न लिखता। मेरी "स्वर्गादपि गरीयसी" जन्मभूमिको

निन्दा होती थी और मैं खड़ा खड़ा सुनता था। पर मैं करही क्या सकता? अगर कुछ कहता तो लोग हंसीमें उड़ा देते। इसीसे मैं चुप रहा। मैं बड़े फेरमें पड़ गया था। महाराज इतना खोद खोद कर सब बातोंको पूछते थे कि मैं कुछ छिपा न सका। तथापि जहां तक बना मैंने छिपानेकी चेष्टाकी। महाराजके सब प्रश्नोंका उत्तर मैंने बहुत थोड़े शब्दोंमें गड़बड़ सड़बड़ देदिया। अपने जानते मैंने बहुतसी कुरतियों और कुचालोंको ढांपना चाहा पर हुआ नहीं।

महाराज विचारेका इसमें क्या दोष है? वह दुनियाके एक छोरमें रहते हैं। भिन्न भिन्न जातियोंकी रीति नीति वह क्या जानें? इस वास्ते नई नई बातें सुन कर उनका अचरज या असम्भव मानना कुछ विचित्र नहीं है। कूएके मेंडक बननेसे बुद्धिमें पक्ष-पात और विचारमें ओछापन आही जाताहै। परन्तु हम और यूरपके सभ्य देश इस दोषसे बचे हैं। ऐसे दूर देशके राजाके पाप पुण्यके विचारोंको मनुष्य मात्रके लिये आदर्श बनाना जरा टेढ़ी खीर है।

जो कुछ मैंने कहा है उसको दृढ़ करने तथा परिमित शिक्षाका जघन्य फल दिखलानेके लिये एक बात सुनाता हूं। पर बहुत कम लोग इसका विश्वास करेंगे। चाहे कोई विश्वास करे या न करे मैं बात सच्ची कहूँगा। मैंने महाराजको प्रसन्न करनेकी आकांक्षा से बारूद और तोपकी प्रशंसा करके कहा "तीन चार सौ वर्षसे यहां बारूद नामकी एक बुकनी चली है। इस बारूदके बड़े भारी ढेरको एक छोटीसी चिनगारी पल भरमें स्वाहा कर देती है और यह बिजलीसी कड़क कर आकाशमें उड़ जाती है। लोहे या पीतल के चोंगेमें अन्दाजसे बारूद और लोहे या शीशेकी गोलियां भर कर पलीता दागतेही गोलियोंकी शक्ति अपार होजाती है। फिर किसकी सामर्थ्य जो इनकी गतिको रोके? इन्हीं चोंगोंका नाम बन्दूक है। जिनमें बड़े बड़े गोले भरे जाते हैं उनका नाम तोप है।

तोपसे केवल मनुष्यही नहीं मरतेहैं, बड़े बड़े किलोंकी दीवारें भी रसातलमें पहुंच जाती हैं और आदमियोंसे भरे भराये जहाज जहांके तहां विलीन होजाते हैं। हम लोग प्रायः इन्हीं तोपोंकी मददसे किले तोड़ फोड़ कर दखल कर लेते हैं और शत्रुओंकी सेना संहार कर विजय प्राप्त करते हैं। इसके बनानेकी तरकीब मैं जानता हूँ। इसके मसाले सहज और सस्ते हैं। मैं महाराज के कारीगरोंको तोप, बन्दूक, बारूद वगैरा बनानेका उपाय बता सकता हूं। यहांके सौ फुटसे ज्यादे लम्बी तोप न होनी चाहिये। इस तोपके द्वारा मजबूतसे मजबूत नगरकोट पलभरमें उड़ सकता है और समूची राजधानी पलक मारते सत्यानाश होसकती है।"

मेरी बात सुन कर महाराजके होश हवास उड़ गये। वह साश्चर्य्यसे बोल उठे "क्या कहा तोप और बारूद ! ताज्जुब है कि तुम्हारे जैसे कीड़े मकोड़े भी ऐसी ऐसी अमानुषिक बातें सोचते हैं। मालूम होता है कि किसी पिशाचने मनुष्य जातिकी जड़ काटनेके लिये यह सब यन्त्र पहले पहल निकाले हैं। खून खराबीकी बातें कहनेमें तेरा मन जरा भी न डरा। बेधड़क बोलता चला गया। तेरी छाती बड़ी कड़ी है। मैं शिल्प या सृष्टिके नूतन आविष्कार से जितना प्रसन्न होता हूं उतना और किसीसे नहीं। मेरा आधा राज्य चाहे चला जाय पर मैं इस निगोड़ी तोपको अपने यहां घुसने न दूँगा। और तुझे भी अगर जान प्यारी हो तो फिर इसकी चर्चा मत चलाना।"

अहह ! चित्तकी सङ्कीर्णता और ओछे विचारोंका भी कैसा अद्भुत प्रभावहै ! परम बुद्धिमान, सकल विद्यानिधान नीति कुशल, प्रजा प्रिय महाराजने जो अपने सद्गुणोंसे प्रतिष्ठित, सम्मानित और सर्वपूजित हैं उस संयोगको जिसके द्वारा वह अपनी प्रजाके धन और प्राणके पूरे अधिकारी हो सकते थे योंही हाथसे निकल जाने दिया ! यूरपवालोंको ऐसा संयोग कभी सपनेमें भी नहीं मिलता है। अगर मिल जाय तो वह कदापि उसे न छोड़ें। मैंने कुछ

सुयोग्य महाराजकी निन्दा करनेकी इच्छासे यह नहीं कहा है परन्तु मैं जानता हूँ कि महाराज अपनी इस कार्रवाईसे हमारे पाठकोंकी दृष्टिमें बहुत हलके हो जायंगे। लेकिन एक बात है— यूरोपके विज्ञ पुरुषोंने जैसे राजनीति (Politics) का भी एक शास्त्र बना डाला है वैसा इन लोगोंने अब तक नहीं बनाया है क्योंकि यहां विद्याका प्रचार अभी अच्छी तरहसे नहीं हुआ है। बस इसीसे यहांवालोंमें यह दोष है। मुझे याद है एक दिन बातही बातमें जब मैंने महाराजसे कहा कि हमारे यहां तो शासन विषयक बहुतसी छपी हुई पोथियां हैं तो वह हम लोगोंकी समझको बहुत भद्दी कहने लगे। राजा या मन्त्रीके रहस्य, संस्कार और षड़यन्त्रको वह घृणित समझतेथे। जिस राज्यमें कोई शत्रु वा प्रतिद्वन्दी नहीं है। वहां "राज्यके रहस्य" (Secrets of State) से क्या तात्पर्य्य है सो वह समझ न सके। वह राज्य शासनका अभिप्राय केवल साधारण ज्ञान, न्याय और दया तथा दीवानी और फौजदारी मुकद्दमेकी जल्दी फैसल करना आदि बतलाते थे। उनकी रायसे जिस भूमिमें एक सेर अन्न पैदा होता है उसीमें दोसरे उपजानेवाला एक किसान देशका जितना उपकार करता है उतना राजनीति जाननेवाले सब मिल कर भी नहीं कर सकते हैं। अन्न पैदा करने वाले कृषकही देशके सच्चे गौरव हैं।

इन लोगोंकी विद्या बहुत दोषयुक्त है। यह केवल धर्म्मनीति, इतिहास, काव्य तथा गणितमें पारङ्गत होते हैं। परन्तु गणित उतनाही सीखते हैं जितना कि नित्यप्रतिके व्यवहारमें, कृषि तथा शिल्पकी उन्नतिमें काम आता है। हम लोगोंमें तो ऐसी विद्याका कुछ आदर नहीं है। विचार, पदार्थ, विज्ञान और वेदान्तकी बातें तो उनके मस्तिष्कमें किसी तरह भी मैं घुसा न सका।

यहांकी वर्णमाला केवल २२ अक्षरोंकी है। बस कानून भी यहां इतनेसे अधिक शब्दोंके नहीं होते हैं। परन्तु वास्तवमें विरले ही कानून इतने शब्दोंके होते हैं। कानूनकी भाषा अत्यन्त सरल

और स्पष्ट होती हैं। कानूनका दो तरहसे अर्थ लगाना यहांके लोग जानते हैं। आईन कानूनकी टिप्पणी करनेसे प्राण दण्ड होता है। दीवानी फौजदारी मुकद्दमेकी नजीरें इतनी कम पाई जाती हैं कि यहांके लोग इस विषयके चातुर्य्यका अभिमान करही नहीं सकते हैं।

चीनियोंकी तरह इनके यहां भी छापेका प्रचार बहुत दिनोंसे है। यहां बहुत बड़े बड़े पुस्तकालय नहींहैं। सबसे बड़ा पुस्तकालय महाराजका कहा जाताहै उसमें भी हजारसे अधिक पोथियां नहीं हैं। यह सब पुस्तकें बारह सौ फुट लम्बी गैलेरीमें सजाई हुई हैं। मुझे महाराजकी आज्ञा थी मैं जो किताब चाहताथा लेकर पढ़ता था। महारानीके कारीगरोंने लकड़ीकी पचीस फुट ऊंची एक सीढ़ी बनादी थी जो दायाके कमरेमें रखी रहती थी। इसके डन्डे पचास पचास फुट लम्बे थे। यह एक ठौरसे दूसरी ठौर उठाकर रखी जा सकती थी। सीढ़ीका निचला हिस्सा दीवारकी जड़से दस फुट दूर रहता था। जो पोथी मैं पढ़ना चाहता था उसे दीवार के सहारे खड़ी कर देता था। फिर मैं सीढ़ीके ऊपरसे पढ़ना शुरू करता—पंक्तिकी लम्बाईके अनुसार आठ दस कदम दायें बायें सरकता हुआ नीचे उतरता था। इस प्रकार पढ़ कर एक पृष्ठ समाप्त करता और पुन: ऊपर चढ़ कर दूसरे पन्नोंमें हाथ लगाता। पन्ने पलटनेके निमित्त दोनों हाथोंसे मदद लेनी पड़ती थी क्योंकि पन्नों की लम्बाई पन्द्रह बीस फुट और मुटाई दफतीके समान थी।

इन लोगोंकी रचना स्पष्ट, ओजस्विनी और कोमल होती है पर अलङ्कार युक्त नहीं। यह लोग बहुतसे अनावश्यक शब्दोंका प्रयोग और विविध प्रकारका वर्णन नहीं करते हैं। मैंने इनकी बहुतसी पोथियां पढ़ी हैं। विशेष कर इतिहास और नीति ग्रन्थही अधिक देखे हैं। दायाके सोनेके कमरेमें एक छोटीसी पोथी धरी रहती थी मैं प्राय: इसीको पढ़ता था। यह दायाकी गुरुआनीकी पोथी थी जो नीति और उपासनाकी पुस्तकोंका सार

बार करती थी। इस पुस्तकमें मनुष्य जातिकी निर्व्वलताका वर्णन था। स्त्रियों और गंवारोंके सिवा कोई पण्डित इसका आदर नहीं करता था। जो हो, इस पुस्तकके पढ़नेका मुझे बहुत चाव हुआ। इसलिये इसको मैंने पढ़ा। पढ़ भर देखा कि ग्रन्थकारने यूरोपके नीति विशारदोंके समस्त साधारण विषयोंका उल्लेख करके लिखा है कि मनुष्य स्वभावहीसे कैसा क्षुद्र, कैसा घृणित और कैसा असहाय है। इतना असमर्थ है कि जङ्गली जानवरोंसे क्या हवासे भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता है। बलवान जीवोंसे मनुष्य कितना निर्बल, द्रुतगामियोंसे कितना सुस्त, दूरदर्शियोंसे कितना अदूरदर्शी तथा परिश्रमियोंसे कितना आलसी है। ग्रन्थकारने आगे चलके फिर कहा है "प्राचीनकालकी अपेक्षा आजकल स्वयं प्रकृति देवीकी अवस्था बिगड़ गई है। अब छोटे छोटे जीव पैदा होने लगे हैं। पुराने जमानेमें केवल मनुष्यही बड़े डीलडौलवाले नहीं होते थे। वरन्च दैत्य दानव भी होतेथे। अब भी जहां तहां जमीन खोदनेसे पुराने समयके बड़े बड़े अक्षर पत्थर और हड्डियां पाई जातीहैं। इतिहास और दादा परदादोंसे सुनी हुई बातें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यह हड्डियां आजकलके छोटे आदमियोंकी हड्डियोंसे कहीं बड़ी हैं। इससे यह सिद्धान्त निकलता है कि आरम्भमें प्रकृतिका यही नियम था कि मनुष्य बहुत बड़े और बलवान हों—खपड़ेके गिरनेसे या लड़के के कङ्कड़ी मारनेसे या छोटी छोटी नदियोंमें डूबने इत्यादि छोटी मोटी घटनाओंसे न मरें।" इसी तरहकी युक्तियां दिखला कर ग्रन्थकर्त्ताने कई सुन्दर नैतिक-सिद्धान्त निकाले हैं जिनका यहां उल्लेख करना मैं वृथा समझता हूँ पर इतना जरूर कहूंगा कि प्रकृतिसे लड़ाई ठानकर नीतिके व्याख्यान करनेकी, नहीं नहीं, असन्तोष तथा दुःख प्रकाश करनेकी परिपाटी सारे संसारमें कैसी फैल गई है! मुझे विश्वास है कि अच्छी तरह खोज करने पर इन विराट् पुरुषों के समान हम लोगोंमें भी इस असन्तोषका कुछ कारण न ठहरेगा।

अब कुछ सेनाके विषयमें लिखता हूँ। यहांके निवासी गर्वके साथ बोल उठते हैं "हमारे राजाके तो दो लाख आठ हजार सेना है एक लाख छिहत्तर हजार पैदल और बत्तीस हजार घुड़सवार।" सौदागरों और किसानोंहीको जहां फौज है और शहरके रईसही जहां फौजके अफसर हैं वहां इतनी फौज होनी कौन मुश्किल है ? तिस पर तुर्रा यह कि इन सबको तलब तनखाह या इनाम इकराम कुछ नहीं दिया जाता है। यह लोग युद्ध विद्यामें बड़े निपुण और दक्ष होते हैं। पर इससे इनकी कुछ नामवरी नहीं क्योंकि हर एक किसान अपने अपने जमींदारके और नगर निवासी अपने अपने नगरके प्रधान रईसके आज्ञाधीन रहते हैं। फिर युद्धविद्यामें यह सुदक्ष क्यों न होंगे ?

मैं कवाइद देखनेको अकसर जाता था। राजधानीके पासही बीस मीलका एक चौकोर मैदान था वहीं कवाइद होती थी। पचीस हजार पैदल और छः हजार घुड़सवारसे अधिक सेना एकत्र नहीं होतीथी। पर जितनी दूरमें वह खड़ी होती थी उसको ख्याल कर गिनती करना मेरे लिये असम्भव था। सवार सब घोड़े सहित लग भग नव्वे फुट तो जरूर ऊंचे होंगे। सेनापतिका सङ्केत पातेही सब सवार एक साथही तलवार निकाल कर आसमानमें घुमाने लग जाते थे। यह दृश्य इतना विराट् इतना अद्भुत और इतना आश्चर्यजनक होता था कि जिसका वर्णन क्या अनुमान भी नहीं होसकता है। उस समय यही मालूम होताथा कि आकाशमण्डलमें चारों ओरसे बिजली चमक रहीहै। आकाश विद्युन्मय हो गयाहै।

यहां किसी दूसरे मुल्कसे कोई आया नहीं फिर महाराजको सेना रखनेका या उसे कवाइद सिखानेका विचार कैसे हुआ सो जाननेकी लिये मेरी बहुत इच्छा हुई। पीछे इतिहास पढ़नेसे तथा लोगोंके कहनेसे सब हाल मालूम होगया। संसारकी समग्र मानवजाति जिस रोगसे पीड़ित है यहां वाले भी उसी महारोगसे बहुत दिनों तक पीड़ित रह चुके हैं। प्रधान पुरुष प्रायः प्रभुत्वके लिये,

और राजा एकाधिपत्यके लिये लड़ चुके हैं। राज्यकी सुव्यवस्थासे यद्यपि सब दबा दिये जातेथे तथापि कभी कभी लागकी आग भभक उठती थी। तीनों दलवाले अपनी अपनी आशा पूरी करनेके लिये घमसान मचा देते थे। कई संग्राम होचुके हैं। पिछले युद्धको वर्त्तमान महाराजके दादाने सबको सन्तुष्ट करके शान्त किया था। तभीसे सबकी सम्मतिके अनुसार नैमित्तिक सैन्य (Militia) रखने का सुप्रबन्ध हुआ है।

नवम परिच्छेद।

आशा बड़ी प्रबल है। आशाहीके भरोसे संसारके सब काम चलते हैं। मुझे भी पूरी आशा थी कि कभी न कभी अवश्य छुटकारा होगा लेकिन कैसे होगा सो विचारना असम्भव था। कुछ उपाय करके कृतकार्य्य होनेकी भी सम्भावना न थी। आफतका मारा भूला भटका कोई जहाज भी उधरसे न आनिकला। अगर आनिकलता तो वह मुसाफिरों समेत बड़ी हिफाजतके साथ गाड़ी पर लाद कर राजधानीमें लाया जाता क्योंकि महाराजने ऐसीही आज्ञा अपने आदमियोंको दे रक्खी थी। महाराजकी यह नितान्त इच्छा थी कि मेरा ब्याह किसी मेरी डीलवाली स्त्रीसे होजाय जिसमें सन्तानकी उत्पत्ति हो। परन्तु मुझे अपने बच्चोंको चिड़ियों की तरह पिञ्जरेमें बन्द होने या बड़े आदमियोंके हाथ बिकनेके लिये छोड़ जाना स्वीकार न था। यह अपमान भला किससे सहा जायगा? मैंने विचार लिया था कि चाहे जान जाय पर यह काम कदापि न करूंगा। हां माना कि सबकी मुझ पर दयाथी— महाराज और महारानी बहुत प्यार करते थे, सारे दरबारका मैं खिलौना बन गया था—सब था पर प्यारी स्वतन्त्रता तो न थी। स्वाधीनताही मनुष्यका भूषण है। स्वाधीनताके बिना स्वर्ग सदृश सुख भी तुच्छ अति तुच्छ महातुच्छ है। इसके सिवा बालबच्चोंकी याद बराबर सताती थी। अपने देशके मनुष्योंके साथ बराबरीसे

बातचीत करनेके लिये और खेत खलिहानमें—गली कूचोंमें निशंक होकर विचरने लिये जी तरसता था। यहां तो पद पद पर मेडक या पिल्लेकी तरह कुचल जानेका डर रहता है। ईश्वरकी दयासे मुझे और कष्ट भोगना न पड़ा। अनायासही बहुत जल्दी छुटकारा होगया सो भी बड़े विचित्र ढङ्गसे। इसका पूरा वृत्तान्त आगे लिखता हूं पाठकगण जरा ध्यानसे पढ़ें।

यहां आये मुझको दो वर्ष होगये। तीसरा वर्ष अब आरम्भ हुआ है। इसी समय महाराज और महारानीने दक्षिण सीमाकी ओर दौरा किया। लाचार मुझे और दायाको भी सङ्ग जाना पड़ा। मैं अपने उसी सफरी पिञ्जरेमें था जिसका हाल ऊपर लिख चुका हूं। यह बारह फुट चौड़ा था। मैंने सोनेके लिये इसमें एक झूला लगवा लिया था जो रेशमकी डोरसे लटकता था। इस झूले के कारण देह नहीं हिलती थी। ऊपर छतमें एक सूराख था जो बन्द हो और खुल सकता था। जब गर्मी मालूम होती, इसे खोल देता, हवा मजेमें आने लगती थी।

जब हम लोग "फलानफलसनिक" पहुंचे तो महाराजने यहां के प्रासादमें कुछ दिन वास करना विचारा। यह शहर समुद्र तट से अठारह मील पर बसा हुआ है। दायाकी और मेरी बुरी दशा थी। मुझे तो सिर्फ जुकाम होगया था लेकिन दाया विचारी तो इतनी बीमार थी कि कमरेसे बाहर भी नहीं निकल सकती थी। मुझे सागर दर्शनकी अत्यन्त लालसा हुई। सोचा वहां पहुंचनेसे शायद भागनेका कुछ ढङ्ग निकल आवे। बीमारीका बहाना करके मैंने समुद्र-समीर सेवनकी अनुमति महाराजसे ली। एक छोकरा मुझे हवा खिलानेके लिये लेचला। इसे मैं बहुत चाहता था क्योंकि यह कुछ दिन मेरे साथ रह चुका था। चलनेके समय दाया फूट फूट कर रोने लगी। उसकी रुलाई अब तक मुझे याद है। उसने बड़ी मुश्किलसे छोकरेके हवाले मुझे कियाथा। उसको खूब सावधान रहनेके लिये बार बार चिता दिया था। न जाने क्या आगम

सोच कर दाया इतनी दुःखित हुई थी। होनेवाली बात मानो उसे पहलेहीसे मालूम होगई थी। पिञ्जरा हाथमें ले छोकरा समुद्र की ओर चल पड़ा। आधे घण्टेमें ठिकाने पर जा पहुंचा। यह जमीन पहाड़ी थी। मेरे कहनेसे उसने पिञ्जरा जमीन पर रख दिया। मैं खिड़की खोल कातर होकर उत्सुक दृष्टिसे सागरकी तरफ निहारने लगा। निहारते निहारते जी घबरा गया तब झूले पर जाकर लेट रहा। छोकरा खिड़कियां मूँद कर चिड़ियों के अण्डोंकी खोजमें घूमता हुआ दूर निकल गया। मैं भी अपने को निरापद समझ, लगा खर्राटे लेने। पिञ्जरेके बेतरह हिल उठनेसे आंखें खुलीं तो देखा कि पिञ्जरा बड़ी तेजीके साथ ऊपर को उठ रहा है। मैं गला फाड़ फाड़ कर पुकारने और चिल्लाने लगा पर कुछ जवाब नहीं। मैंने खिड़की खोली तो आकाश और बादलोंके सिवा और कुछ दिखाई न दिया। इतनेमें पङ्खकी फट-फटाहट सुन पड़ी जिससे मैं अपनी दुरवस्थाको अच्छी तरह समझ गया। मालूम होगया कि कोई गिद्ध पिञ्जरेको चोंचमें लिये उड़ा जा रहाहै। किसी चट्टान पर पटक कर मुझे जीता निगल जायगा। हाय! इतने पीछे रहने पर भी गिद्धको मेरी गन्ध पहुँच गई। यह सब बातें सोच कर मेरे होश हवास जाते रहे। आंखोंके आगे अन्धियारी छागई। परमात्माका स्मरण कर मैंने नेत्र बन्द करलिये।

गिद्ध और भी फर्राटे भरने लगा। पङ्खकी फटफटाहट भी बढ़ने लगी। पिञ्जरा भी दायें बायें हिलने लगा। चोंचकी खटा खट सुनाई पड़ी। इतनेमें किसी चीजके टूटनेकी फटसे आवाज आई और पिञ्जरा बड़े वेगसे नीचे गिरने लगा। यह इस तेजीसे गिरा कि मेरा दम घुटने लगा। एक मिनटके बाद इतने जोरका धमाका हुआ कि कानके परदे फट गये। तमाम अन्धेरा छागया। फिर पिञ्जरा ऊपर उठा और खिड़कियोंकी सन्धिसे उजाला आने लगा। अब मालूम होगया कि मैं समुद्रमें गिर पड़ा हूं। पिञ्जरेमें मैं था और कुछ मेरा असबाब। मजबूतीके लिये उसके ऊपर नीचे और

चारो कोनोंमें लोहेके पत्तर जड़े थे। अतः वह पांच फुट तो पानी के भीतर और बाकी बाहर रहा। वह उतराता हुआ बहने लगा।

मैं समझता हूँ जब गिद्ध पिञ्जरा लिये उड़ा जाता था तब और भी दो चार गिद्ध आपहुंचे और आपसमें शिकारके लिये लड़ने लगे। इसी लड़ाई भिड़ाईमें पिञ्जरा चोंचसे छूट कर समुद्रमें गिर पड़ा। और बात भी यही मालूम होती है। पिञ्जरेके नीचे लोहेका मजबूत पत्तर लगा था इसीसे जलकी चोटसे वह नहीं टूटा। हर एक जोड़ इसका खूब कसा हुआ था और किवाड़ भी इसमें कब्जेदार न थे बल्कि ऊपर नीचे उठनेवाले। सो वह भी खूब कसे थे। पानी घुसनेका दाव किसी तरहसे भी न था। मैं बड़ी कठिनाईसे झूले परसे उतरा। हिम्मत करके ऊपरकी दरीची हवा आनेके लिये खोलदी क्योंकि हवा बिना मेरे प्राण निकले जाते थे।

दायाकी याद मुझे बराबर आती थी। हाय! जन्म भरके लिये मैं उससे अलग होगया! वह मेरा कितना लाड़ प्यार करती थी! मेरे बिना वह कितना रोती होगी! महारानी न जाने उस पर कितना गुस्सा होती होंगी! उसके दुःखको सोच कर मैं अपना सब दुःख भूल गया। जैसी विपदमें मैं फंसा था वैसी और किसी पर काहेको आई होगी! यही मालूम होता था कि अब पिञ्जरा किसी पहाड़से टकराया अब उलटा—अब मरा, मौत सिरपर नाच ही रही थी सिर्फ शीशेकी किवाड़ियोंके फूटनेकी देर थी। दरीचियोंमें जाली मंढ़ी हुई थी इसीसे जान बची। अब पानी भी जरा जरा घुसने लगा। मैं भी उसके बन्द करनेकी यथा साध्य चेष्टा करता जाता था। मैं अपनी जिन्दगीसे हाथ धो बैठा क्योंकि चारों ओर मृत्यु दिखाई पड़ती थी। और कोई आफत चाहे न आवे पर अन्न जलके बिना तो जरूर मरना पड़ेगा। चार घण्टे तक मैं इन्हीं सब विचारोंमें मग्न रहा।

मैं पहले कह चुकाहूं कि पिञ्जरेके उस तरफ जिधर खिड़कियां

न थीं दो कड़े लगे हुए थे। इन्हींमें रस्सी पिरो कर सवार लोग पिञ्जरेको कमरसे बांध लेते और घोड़े पर ले चलते थे। अच्छा सुनिये! जब मैं मृत्युका सपना देख रहा था मुझे उस तरफ जिधर कोढ़े थे कुछ आहटसी मालूम हुई। फिर जान पड़ा जैसे पिञ्जरे को कोई खेंच रहा है। अब बचनेकी कुछ कुछ आशा होने लगी क्यों होने लगी सो मालूम नहीं। मैंने चट एक कुर्सीको जो पेच से कसी हुई थी उखाड़ कर ऊपरवाली खिड़कीके ठीक नीचे ला रखा जिसे हवा आनेके लिये अभी खोल दिया था। मैं कुर्सी पर खड़ा होगया और खिड़कीके पास मुंह लेजाकर जोरसे पुकारने लगा। जितनी भाषायें जानता था एक एक कर सबमें मदद मांग गया। फिर छड़ीको जो बराबर साथ रहती थी रूमाल बांध कर ऊपर उठाया और कई बार हिलाया। समझा था कि आस पास कोई जहाज होगा तो आकर मुझे उबार लेगा।

यह सब मैंने किया पर लाभ कुछ न हुआ। पिञ्जरा आगे बढ़ताही जाता था। एक घण्टेके बाद यह किसी कड़ी चीजसे टक्कर खागया। मैंने समझा कि टक्कर पहाड़से लगी है और अब मामला खतम है। इतनेमें ऊपर रस्सेकी खरखराहट सुनाई पड़ी और पिञ्जरा भी धीरे धीरे जलसे तीन फुट ऊंचा उठ गया। मैंने फिर रूमाल हिलाया गला फाड़ फाड़के पुकारा। अबके तीनबार जयध्वनि सुन पड़ी। मारे खुशीके मैं फूल कर कुप्पा होगया छत पर आदमियोंके चलनेकी धमधमाहट मालूम हुई। खिड़की की राहसे अङ्गरेजीमें किसीने पूछा "भीतर कौन है?" मैंने जवाब दिया "एक अङ्गरेज। बड़ी भारी विपदमें फंस गया हूं। ऐसी विपदमें कभी कोई नहीं पड़ा होगा। दया कर इस कैदसे मुझे निकालो मैं बड़ा उपकार मानूंगा।" ऊपरसे आवाज आई "कुछ परवाह नहीं—अब मत डरो। पिञ्जरा जहाजसे बांध दिया गया है। बढ़ई आता है राह बन जाय तो तुम्हें निकाल लूंगा।" मैंने कहा "इतने बखेड़ेकी क्या दरकार है? इसमें तो बहुत देर लगेगी।

किसी मल्लाहसे कह दीजिये वह इसको उठा कर जहाज पर रख देगा।" मेरी बात सुन कर कोई तो हंस पड़ा और कोई मुझे पागल समझने लगा। सचमुच उस समय मुझे याद न था कि मैं अपने जैसे आदमियोंके बीचमें आगया हूँ। आखिर बढ़ई आया और छेद बनाया गया। सीढ़ीके सहारे मैं जहाज पर जा पहुँचा। उस समय मैं बहुत कमजोर था।

जहाजवाले सब अचम्भेमें थे। प्रश्नोंकी भरमार मुझ पर होने लगी पर उस समय मुँह खोलना मुझे पसन्द न था। इन नन्हे नन्हे जीवोंको देख कर मैं घबरा सा गयाथा। उन विराट पुरुषोंके आगे यह तुच्छ मालूम पड़ते थे। कप्तान जी बड़ा भलामानस था अपने कमरेमें लेगया और वहां उसने मुझे शराब पिलाई फिर अपने बिस्तरे पर सुला दिया। मैंने कहा "मेरे पिञ्जरेमें बड़ी बड़ी बेशकीमत चीजें हैं—एक सुन्दर झूला, एक सफरी पलङ्ग, दो कुर्सियां, एक मेज वगैरः हैं। पिञ्जरेके चारों ओर रेशमी गद्दियां और परदे लगे हुए हैं। अगर उसको अपने किसी आदमीसे यहां मंगवाइये तो अभी सब खोलकर दिखा दूं।" मेरी इन बेमहल बातोंको सुनकर कप्तान शायद मुझे पागल समझने लगा। तथापि वह समझाकर बोला "आप आराम कीजिये मैं अभी मंगवाताहूं।" इतना कह वह बाहर चला गया और मैं निद्रादेवीसे प्रेमालाप करने लगा।

मैं कई घण्टे तक सोया लेकिन बराबर उन्हीं सब पिछली बातों को सपनेमें देखता रहा। जब नींद टूटी तो जी बहुत अच्छाथा। उस समय रातके आठ बज गये थे। कप्तानने फिर मुझे खिलाया और बड़ा सम्मान किया।

मेरे पिञ्जरेकी बड़ी छीछालेदर हुई। उसकी दशा देख मुझे बड़ा दुःख हुआ। बेवकूफ मल्लाहोंने तोड़ फोड़ नोच खसोट कर उसके तखते निकाल लिये थे। रेशमी गद्दियोंको फाड़ फूड़ कर चौपट कर दिया और पेचसे जड़ी हुई मेज वगैरः को भी तोड़ ताड़ कर सत्यानाश कर डाला था।

जब सन्नाटा होगया और मेरा जीभी ठिकाने हुआ तब कप्तान ने मेरे सफरका हाल पूछा और कहा "आज दिनको करीब बारह बजे जब मैं दूरबीन लगा कर इधर उधर देख रहा था मेरी नजर आपके पिञ्जरे पर जापड़ी। मैंने पहले इसे कोई नाव समझा था। नजदीक आने पर यह कुछ औरही मालूम पड़ा। तब मैंने किश्ती पर अपने आदमियोंको इसका पता लगानेके लिये भेजा। वह सब आकर आश्चर्यके साथ बोले कि यह तो तैरता हुआ एक घर है। पर मुझे विश्वास न हुआ। उन लोगोंने कसम खाके कहा तो भी मैं हंसने लगा। शेषमें मैं स्वयं वहां गया और एक बड़ा रस्सा भी साथ लिवाता गया। मौसम अच्छा था। कई मरतबे आप के पिञ्जरेको प्रदक्षिणाकी द्वार और किवाड़ोंको अच्छी तरह देखा। आंकड़ों पर दृष्टि पड़ी तो उनमें रस्सा बांध दिया और खेंच कर जहाजकी ओर लेचलनेको मल्लाहोंसे कहा। जब जहाजके पास आये तो एक दूसरा रस्सा ऊपरवाली आंकड़ीसे बांध कर ऊपर उठानेके वास्ते हुक्म दिया। सब जहाजियोंने मिल कर चरखी पर खेंचा परन्तु तीन फुटसे ज्यादे ऊंचा न उठा सके बाद आपका रूमाल फहराता हुआ उनको दिखलाई पड़ा तब समझा कि इसके भीतर कोई अभागा बन्द है। फिर जो कुछ हुआ सो आप जानते ही हैं।" इतना सुन कर मैंने अपना वृत्तान्त कह सुनाया और पूछा "जिस समय आप लोगोंने पहले मुझे देखा उस समय आकाश में कोई बड़ा पक्षी दिखाई पड़ा था?" उसने जहाजियोंसे पूछ कर जवाब दिया "मैंने तो नहीं देखा लेकिन एक मल्लाह कहता है कि उसने उस समय तीन गिद्ध उत्तरकी तरफ उड़ते हुए देखेहैं पर वह बहुत बड़े न थे। मामूली जैसे होते हैं वैसेही थे।" मैं समझता हूं बहुत ऊंचे पर होनेहीके कारण वह छोटे मालूम पड़े होंगे।

मैं—अच्छा यहांसे जमीन कितनी दूर पर होगी?

कप्तान—कमसे कम तीनसौ मील पर।

मैं—नहीं, इतना नहीं। समुद्रमें गिरनेसे करीब दो घण्टे पहले तो मैं उसी देशमें था जहांसे चला आता हूं।

इतना सुनतेही वह फिर मुझे बौड़म समझने लगा और पुनः सोनेके लिये कहा। मैंने बहुत तरहसे समझाया और कहा कि मैं कभी पागल न था और न हूं। मेरे होश हवास सब ठीक हैं। पर वह क्यों मानने लगा? बोला "तुम जरूर कोई भारी अपराधी हो। किसी भारी अपराधके कारण तुम्हें यह सजा मिली थी। मैंने बड़ी भूल की जो तुम्हारे प्राण बचाए। खैर चलो दूसरे बन्दर पर तुम्हें उतार कर जहाज हलका कर लूंगा। तुमने जैसी जैसी असम्भव बातें जिस भाव भङ्गीसे कही हैं उनसे तुम पर पूरा सन्देह होता है।

मैंने हाथ जोड़ कर कहा "आप धीरज धरें और मेरी सब कहानी सुनलें तब आपके मनमें जो आवे सो कीजिये।" मैं पुनः आदिसे अन्त तक अपनी सब बातें एक एक कर सुना गया। सत्य की तामम जय है! और कप्तान भी कुछ पढ़ा लिखा था। अतएव मेरी सच्ची बातोंने उसके चित्त पर कुछ प्रभाव डाला। मैंने बक्स मंगवा कर वहांकी अनूठी अनूठी चीजें दिखलाईं। महाराजकी दाढ़ीके बालकी कङ्घी (जो मैंने बनाई थी) एक फुटसे लेकर गज गज भर लम्बी सूई और पिन, भिड़के डङ्क जो सूएके बराबर थे, महारानीके बाल और एक अंगूठी जो महारानीने प्रसन्न होकर छगुनियांसे उतार कर मेरे गलेमें पहना दी थी दिखाई तो कप्तानका विश्वास हुआ। मैं कप्तानको उसकी खातिरदारीके बदले अंगूठी देने लगा पर उसने नहींली। फिर मैंने एक गट्टा दिखाया जो महारानीको एक सहेलीके अंगूठेसे काट लिया था। यह सूख कर इतना कड़ा होगया कि लण्डन पहुंच कर इसका एक कटोरा बनवाया और फिर चान्दीसे मंढ़वा दिया। चूहेके चामका एक पाजामा भी मैंने दिखाया।

दांत देख कर कप्तानको बहुत आश्चर्य हुआ। यह दांत दाया के एक नौकरका था उसके दांतमें जब दर्द हुआ तो एक नीम हकीमने उसका दांतही उखाड़ डाला था। मैंने उसे धो धाकर

अपने सन्दूकको हवाले किया। यह अन्दाज एक फुट लम्बा था और इसका व्यास था चार इञ्च। कप्तानने और कुछ तो लिया नहीं पर इस दांतको बड़ी मुश्किलसे लिया। इसके लिये मुझे विपुल धन्यवाद भी दिया।

इन सब चीजोंको देख कर कप्तान बहुत खुश हुआ और बोला "इङ्गलेण्ड पहुंचने पर इस यात्राका वृत्तान्त पुस्तकाकार आप छपवादें तो बहुत अच्छा हो।" मैंने कहा "आज कल बहुतेरी यात्राएं छप गई हैं। आजकल सब बात आश्चर्यजनक हैं। ग्रन्थकार लोग भी आजकल शायद अपनी डींग हांकने, स्वार्थ सिद्ध करने और मूर्ख पाठकोंका मनोरञ्जन करनेकी अपेक्षा सत्यकी ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। और मेरी पोथीमें तो अद्भुत पेड़ पत्ते जीव जन्तु वगैराके वर्णनके बदले साधारण बातें होंगी अथवा जङ्गली जातियों की पुरानी असभ्य चाल ढाल और मूर्त्ति पूजा रहेंगी सो इन बातों को प्रायः सभी ग्रन्थकर्त्ता लिख चुके हैं। तथापि आपकी इस कृपाका धन्यवाद है। मैं अवश्य आपकी आज्ञा पालन करूंगा।"

मैं सब बातें गर्ज कर कहता था। इस पर कप्ताननें पूछा "क्या वहांके लोग कुछ ऊंचा सुनते थे?" मैं बोला "नहीं—मेरीही आवाज इतनी धीमी थी कि उनको सुनाई नहीं पड़ती थी। मैं जब वहां था तो मुझे इतने जोरसे बोलना पड़ता था जितना कि छत परके आदमीको आंगनवालेंसे बोलनेमें चिल्लाना पड़ता है। दो बरससे यही अभ्यास पड़ रहा है। जब तक वह मुझे हाथमें न उठा लेते थे उनको मेरी आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। उन लोगों की विकट ध्वनि सुनते आप लोगोंकी आवाजा मुझे फुसफुसाहट सी मालूम होती हैं। एक बात और सुनिये। जब मैं पहले आपके जहाज पर आया। तो आप लोग मुझको अत्यन्त छोटे मालूम पड़ते थे। इसी छुटाईके मारे जब वहां मैं था आईना कभी नहीं देखता था। आईना देखनेसे मुझको अपने ऊपर अत्यन्त घृणा होजातीथी। उनकी वह विराट् मूर्त्ति देख कर मुझको अपना शरीर

बहुतही छोटा और घृणित मालूम होता था।" कप्तान बोल उठा इसीसे भोजनके समय आप अचरजके साथ इधर उधर देखते और हंसतेथे। यह ढङ्ग देखकर हम लोगोंने आपको पागल समझाथा।"

मैं—हां आप सच कहते हैं। जब आपने छोटी छोटी रिकाबी और प्याले रख दिये तो मुझको बड़ा आश्चर्य्य हुआ था। यद्यपि रानीने मेरे लिये छोटे छोटे वर्त्तन बनवा दिये थे तथापि वहांके बड़े बड़े वर्त्तन रात दिन देखते देखते मेरी आंखें बिगड़ गई हैं। आदमी जैसे अपनी भूल आप नहीं देखता है वैसेही मैं भी अपनी छुटाई नहीं देख सकता था।

कप्तान—ठीक है आपके पेटसे आपको आंखेंही बड़ी हैं। दिन भर उपास करने पर भी आपने कुछ ज्यादे भोजन न किया।

इसी प्रकार और बहुतसी बातें हुईं जिनका लिखना फजूल है। नौ महीनेके बाद जहाज इङ्गलेण्ड पहुंचा। तीसरी जून १७०६ ईस्वीको डाऊनमें जहाजने लङ्गर गिराया। मैं कप्तानको भाड़ा देने लगा पर उसने फूटी कौड़ी भी न ली। आखिर मैं एक टट्टू किराया करके घरको तरफ रवाना हुआ।

रास्तेमें छोटे छोटे घर, पेड़, मवेशी, आदमी वगैराको देखकर मैं अपनेको फिर लिलीपटमें समझने लगा। मुझको बराबर यही डर लग रहा कि कहीं कोई पैरसे न कुचल जाय। मैं अक्सर बोल उठता था—"हटो बचो नहीं तो कुचल जाओगे।" इस पर लोग मेरा मुंह देखने लग जाते थे।

जब मैं घर पहुंचा तो भीतर घुसनेके समय ठोकर लगनेके डर से सिर झुका लिया था। स्त्री मुझको देख कर खुशीके मारे मिलने को दौड़ी तो मैं झुक गया। मैंने समझा अगर न झुकूंगा तो वह मेरे गले तक न पहुंच सकेगी। मेरी लड़कीने पैर छुए पर मैं उसे देखही न सका क्योंकि मुझको तो साठ फुट ऊंची चीज देखनेकी बान थी। जब वह उठ कर खड़ी हुई तो देखा और उसको गोदमें लेनेके लिये एकही हाथ बढ़ाया था। अपनेको तो विराट् पुरुष

और दूसरोंको निपट बौना मैं समझने लग गया था। मैंने स्त्रीसे कहा—"प्यारी! तुम सबको खानेके लिये नहीं मिलता था क्य? तुम सबतो सूख कर कांटा बन गई हो।" मतलब यह कि जब मैं घर पहुँचा तो सभी मुझको कप्तानको तरह सिड़ी समझने लगे। इसमें आश्चर्यही क्या? यह तो पक्षपात और अभ्यासका नमूना है।

थोड़े दिनोंके बाद सब बातें साबिक दस्तूर होगई। मैं अपने आपेमें आगया और घरवाले भी मुझको होश हवासमें समझने लगे। स्त्रीने बहुत कहा सुना कि अब समुद्रकी यात्रा मत करो पर विधनाको यह मञ्जूर न था।

इति द्वितीय भाग समाप्त

विचित्र-विचरण।

तृतीय भाग।

लपूटाकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

पाठकगण! मैं दस बारह दिन भी घरमें न रहा था कि 'होपवेल' नामक जहाजका सरदार विलियम रबिनसन् मेरे पास पहुंचा। इसके साथ पहले कुछ दिन तक मैं काम कर चुका था। यह जहाजका नाखुदा था और मैं जरीह। यह मुझको भाईसे भी बढ़ कर मानता था। इसीसे मेरे आनेका हाल सुन कर मुझसे मिलनेके लिये दौड़ा आया। मेरे खुशी राजीसे घर लौट आने पर इसने बहुत आनन्द प्रगट किया। बहुत देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। फिर इसने कहा—"मैं दो महीनेमें हिन्दुस्थानका अफर करनेवाला हूं। मैं कुछ कह तो नहीं सकता लेकिन अगर आप चाहें तो चल सकते हैं। दो सहकारीके अलावे एक जरीह भी आपके नीचे रहेगा। मामूली तनखाहसे आपको दूनी मिलेगी। आप बहुत सफर कर चुके हैं सो आपका तजरबा मुझसे कुछ कम नहीं है। इसलिये मैं वादा करता हूं कि जहाजका सब काम आपकी सलाहसे हुआ करेगा।" और भी शिष्टाचारकी बहुतसी बातें उसने कही थीं। मैं इस अनुरोधको टाल न सका। देशदेशान्तरोंमें घूमनेकी कुछ ऐसी चाट लग गई थी कि पिछले कष्टोंका कुछ भी ख्याल न कर मैंने फिर चलनेकी ठहराई। प्यारी ने बहुत कहा सुना पर उसे भी समझा बुझाके राजी करलिया।

ता० ५ वीं अगस्त १७०६ ईस्वीको जहाज खुला और ११ वीं अप्रैल १७०७ को फोर्टसैण्ट जोर्ज जापहुंचा। कई आदमी बीमार पड़ गये थे इसलिये तीन हफ्ते तक जहाज यहां रुका रहा। यहांसे हम लोग टौनक्वीन गये। जो कुछ माल यहां खरीदना था वह सब तैयार न था अतएव कप्तानने यहां भी कुछ दिन ठहरनेकी आज्ञा दी। चुपचाप बैठे रहनेसे सिवाय खर्चके कुछ लाभ नहीं। इसलिये कप्तानने कुछ सोच समझ कर छोटीसी एक नाव खरीदी और उसमें वही सब चीजें भरीं जिनसे टौनक्वीनवाले आस पासके टापुओंमें तिजारत करते हैं। नाव पर चौदह मनुष्य थे जिनमें तीन उसी देशके थे। मैं सबका सरदार हुआ। कप्तान तो टौनक्वीन में रहा और मैं नाव लेकर टापुओंकी तरफ रवाना हुआ।

तीसरे दिन बड़े जोरकी आंधी आई। नाव राह छोड़ कर उत्तर पूर्व दिशाको जाने लगी। पांच रोज तक यही दशा रही। फिर पूर्वको मुड़ी। आंधी बन्द होगई थी लेकिन पश्चिमी हवा का वेग अधिक था। दसवें दिन डाकुओंके दो जहाजोंने पीछा किया। नाव बोझके मारे तेजीसे चल नहीं सकती थी। आखिर डाकुओंने हमारी नावको पकड़ लिया। हम लोगोंके पास अस्त्र शस्त्र कुछ नहीं था। हम लोग सब तरहसे निरुपाय थे।

दोनों जहाजके डाकुओंने एकही समय आक्रमण करके तेजीके साथ नावमें प्रवेश किया। मैंने अपने आदमियोंको पहलेसे पट पड़ रहनेकी आज्ञा दे रक्खी थी। सब मुंह छिपाये पड़े थे। मैं भी पड़ा था। डाकुओंने आतेही हम लोगोंकी मुश्कें बांध कर अपने आदमियोंके हवाले किया फिर वह लोग लगे नावको रत्ती रत्ती ढूंढ़ने।

इन लुटेरोंमें एक दिनामार भी था। वह सबका मालिक तो नहीं पर सरदार सा मालूम होता था। वह सूरत शकलसे पहचान गया कि हम सब अङ्गरेज हैं। हम लोगोंको सुना कर वह अपनी बोलीमें बकने लगा—"तुम लोगोंको पीठसे पीठ बांध

कर समुद्रमें डुबा दूंगा।" मैं दीनामारोंकी भाषा मजेमें बोल लेता था। मैंने उससे कहा—"साहब! हम लोग भी प्रोटेष्टेण्ट क्रस्तान हैं। हम आप सब एकही देशके हैं। कृपा कर कप्तानसे सिफारिश कर दीजिये जिसमें हम लोगोंकी जान बचे।" इतना सुनतेही वह आग बगूला होगया। लाल लाल आंखें करके अपने साथियों से जापानी भाषामें न जाने क्या क्या बोलने और मुझको धमकाने लगा।

इन डाकुओंके दो जहाज थे। बड़े जहाजका सरदार एक जापानी था। वह टूटी फूटी डिनमार भाषा बोल लेता था। उसने मेरे पास आकर कई प्रश्न किये। मैंने नम्रतासे सबका उत्तर दिया। तब वह बोला—"अच्छा धीरज धरो तुम्हारी जान नहीं जायगी।" मैंने तब खूब भुककर जापानीको सलाम किया और उस दिनामार से कहा—"देखो! तुम क्रस्तानोंसे अधिक दया इस विधर्मीमें है।" पर इस ढिठाईका मजा मुझको खूब मिल गया। वह दुष्ट नीच मेरी जान लेनेकी चेष्टा करने लगा पर उसकी कुछ पेश न गई। उसका यही मन था कि मैं समुद्रमें फेंक दिया जाऊं पर जापानी बड़े दयालु थे उन्होंने इसकी एक न सुनी। आखिर उसने मुझको एक भारी सजा दिलाई जो मौतसे भी बढ़ कर थी।

मेरे आदमियोंको लुटेरोंने आपसमें बराबर बांट लिया। नाव पर नये मल्लाह बहाल किये गये। मेरे लिये डांड़ पालसे दुरुस्त एक डोंगी आई। इसमें चार दिनकी खुराक रक्खी गई लेकिन दयावान् जापानीके कहनेसे दूनी करदी गई। मैं परमात्माका ध्यान कर डोंगी पर चढ़ बैठा और वह समुद्रमें छोड़दी गई। जिस समय मैं चला उस नराधम दिनामारने खूब कोसा और गालियां दीं। पर मैंने उधर देखा तक नहीं। हां एक बात कहनेको भूलही गया था कि जापानीने मेरे कपड़ोंकी तलाशी किसीको नहीं लेने दी थी।

डाकुओंसे कुछ दूर निकल जाने पर दूरबीनके सहारे दक्षिण

पूर्वकी ओर कुछ टापू नजर आए। हवा ठीक थी। सबसे पासवाले टापूमें पहुंचनेकी इच्छासे पाल तान कर डोंगीको उधरही घुमाया। लगभग तीन घण्टेमें वहां जा पहुंचा। यह स्थान बिलकुल पथरीला था। खैर, मैं उतरा। अण्डे जमा कर पत्थरसे आग निकाली और उन्हें भून कर खूब खाया। हाथमें भोजनकी जो कुछ सामग्री थी उसे आगेके लिये बचा रक्खा। रातको वहीं एक गुफामें सो रहा। नींद खूब मजेकी आगई थी।

सवेरे उठ कर मैं दूसरे टापूमें गया। वहांसे तीसरे और फिर चौथेमें पहुंचा। कभी डांड़से और कभी पालसे काम निकालता था। अपने दुःखकी मथासे पाठकोंको टिक न कर खुलासा कह देता हूं कि पांचवें दिन मैं अन्तिम द्वीपमें पहुंच गया। इसके बाद फिर कोई द्वीप दृष्टि गत नहीं होता था। यह पहले टापूसे दक्षिण पूर्वकी ओर झुकता हुआ था।

मैंने समझा था कि यह निकट होगा मगर दूर निकला। कोई पांच घण्टे वहां तक पहुंचनेमें लगे थे। वहां पहुंचने पर द्वीपकी प्रदक्षिणा करने लगा। इसी बीचमें एक खाड़ी नजर पड़ी। जो मेरी डोंगीसे तिगुनी चौड़ी थी। डोंगी रखनेकी यह अच्छी जगह मिल गई। यह भी भूमि पथरीली थी किन्तु कहीं कहीं हरी हरी घास और भीनी भीनी बासवाली बेलें दिखाई पड़ीं। मेरे साथ भोजनकी जो कुछ थोड़ीसी सामग्री थी उसीमेंसे कुछ खाया और कुछ एक गुफामें हिफाजतसे रख दिया। वहां गुफा की बहुतायत थी। रात भर उसी गुफामें जिसमें भोजनकी सामग्री रक्खी थी मैं पड़ा रहा। सूखी सूखी घास चुन कर बिस्तर बनाया। सोया पर नींद नहीं आई। इसी सोचमें सवेरा होगया कि हाय इस वीरानमें अब कैसे प्राण बचेंगे—न जाने मैं कौन मौत मरूंगा। अपनी दशा विचार कर मैं नितान्त कातर होगया। उठनेकी सामर्थ्य न रही। जब कुछ दिन चढ़ आया तब मैं गुफासे बाहर हुआ। कुछ देर तक इधर उधर घूमा किया। आकाश अति

स्वच्छ था सूरज इतना तेज था कि उधर निहारना कठिन हुआ। लाचार मुँह फेर लिया। इतनेहीमें यकायक सूर्य्य छिप गया। अन्धेरा होगया लेकिन बादलमें सूर्य्यके छिप जानेसे जैसा अन्धेरा होता है वैसा नहीं था। यह एक दम विलक्षण था। मैंने मुंह फेरा तो देखा कि मेरी ओर भगवान् भास्करके बीचमें एक विशाल धुन्धला पदार्थ आपड़ा है जो टापूकी तरफ बढ़ा आता हैं। यह दो मीलके लग भग ऊंचा मालूम होता था। कोई छः सात मिनट तक सूर्य्यदेव इसके ओझलमें रहे पर हवा बहुत ठंढी नहीं हुई और न आकाशहीमें अन्धेरा था। ज्यों ज्यों वह निकट आता जाता था त्यों त्यों उसके सब भाग साफ मालूम होते थे। वह कुछ ठोस पदार्थसा था। उसकी पेंदी चिपटी, चिकनी और चमकीली थी। समुद्रकी परछांहीसे वह और भी चमदार मालूम पड़ता था। मैं किनारेसे करीब दो सौ गज ऊंचे पर खड़ा था। मैंने देखा कि वह पदार्थ जो मेरे और सूर्य्यके बीचमें आगया था ठीक मेरे सामने एक मीलसे भी कम दूरी पर उतर रहा है। मैंने दूरबीन लगाई तो मालूम हुआ कि अनेक मनुष्य उसके दोनों ओर चढ़ और उतर रहे हैं परन्तु वह सब क्या कर रहे हैं सो कुछ जान न पड़ा।

प्राण स्वभावतः सभीको प्रिय है। मैं मनही मन बहुत प्रसन्न हुआ। सोचा इस दैवघटनासे शायद मेरा निकास यहांसे होजाय पर साथही इसके आकाशमें उड़ता हुआ टापू देख कर मेरे आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा। तिस पर तुर्रा यह कि उसमें मनुष्य भी वास करते थे जो इच्छानुसार इस द्वीपको चला और ठहरा सकते थे। सिर्फ यही नहीं ऊपर उठा सकते, नीचे उतार सकते और जिधर मन चाहता उधर ले जाकते थे। उस समय उस अद्भुत पदार्थ पर दार्शनिक विचार करनेका अवसर न था इसलिये सब छोड़ छाड़ कर मैं यह देखने लगा कि वह किस तरफ जाता है क्योंकि थोड़ी देरके लिये वह ठहर गया था।

थोड़ी देरके बाद वह कुछ और समीप आया। अब मझेमें

दिखाई पड़ने लगा कि एकसे दूसरे पर जानेके लिये दोनों बगलों में छज्जे और सीढ़ियोंका सिलसिला बना हुआ है। सबसे नीचे यानी छज्जे पर कुछ लोग बड़ी बड़ी बंसियां लिये मछलियां पकड़ रहे हैं और कुछ लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं। मैंने अपनी टोपी तथा रूमालको हिलाना शुरू किया। जब वह और भी निकट आया तो मैं गला फाड़के चिल्लाने लगा। इतनेमें जिधर मैं था उधरहीको बहुतसे मनुष्य एकत्र होगये। मेरे सवालका तो कुछ जवाब मिला नहीं पर देखा कि वह सब मेरी तरफ उंगलीसे कुछ इशारे कर आपसमें कुछ बात चीत करने लगी। फिर पांच छः आदमी दौड़ते हुए ऊपरके महल पर चढ़ कर गायब होगये। मैंने समझा कि वह सब अपने सरदारके पास खबर देने गये हैं और बात भी पीछे वही ठहरी।

दर्शकोंकी भीड़ बढ़ गई। आधही घण्टेमें वह टापू चल कर इतना ऊपर उठा कि उसका निचला छज्जा ठीक मेरे सामने सौ गजसे भी कमती फासले पर आपहुंचा। मैंने हाथ जोड़ कर दीनतासे बड़ी बिनती की पर उत्तर मिला नहीं। जो लोग नीचेवाले छज्जे पर खड़े थे ठाट बाटसे भलेमानस रईस जान पड़े। वह लोग मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें परामर्श कर रहे थे। आखिर उनमेंसे एकने स्पष्ट, मीठे और सरल शब्दोंमें मुझको पुकारा। इसका उच्चारण ठीक इटली देशकी भाषाके सदृश था। इसीसे मैंने भी उसी भाषामें उत्तर दिया। किन्तु किसीने किसीकी बात नहीं समझी। बात चाहे न समझी हो पर मैं कैसे दुःखमें था सो जरूर उन लोगोंने समझ लिया था।

उन लोगोंने मुझको पहाड़ी परसे उतरकर समुद्र तटकी तरफ जानेका सङ्केत किया। मैंने भी चट पट वही किया। जब मैं उड्डीयमान् द्वीपके नीचे जा पहुंचा तो जञ्जीरसे बंधी हुई छोटीसी एक चौकी लटकाई गई। मैं उस पर जा बैठा और वह फिर चरखीके सहारे ऊपर खेंचली गई।

द्वितीय परिच्छेद।

जब मैं ऊपर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मुझे घेर कर खड़े हो गये। जो सब पास खड़े थे भलेमानस मालूम पड़े। मैं उन्हें और वह मुझे आश्चर्य्यके साथ देख रहे थे। मैंने अब तक ऐसे विचित्र आकार, आचरण और रूपके मनुष्य कभी नहीं देखेथे। इन सबकी गर्दनें बांयें या दायेंको झुकी हुई, आंखें एक भीतरको धंसी और दूसरी ऊपरको उठी हुई थी। कपड़ों पर चन्द्र सूर्य्य नक्षत्र तारों की मूर्तियां तथा सारङ्गी, बांसुरी, बीन, तुर्ही, सितार इत्यादि बाजोंकी तसवीरें बनी हुई थीं जिन्हें युरोपवाले जानते भी नहीं हैं। इधर उधर खड़े हुए कई खानसामा नजर आए जिनके हाथमें एक एक छोटा डण्डा था। इन डण्डोंके एक ओरमें हवासे फूली हुई एक एक थैली लगी हुई थी। इन थैलियोंमें सूखी मटर अथवा कङ्कड़ियां भरी हुई थीं। इन्हीं डण्डोंसे वह खानसामा उन लोगोंके मुंह और कानोंमें जो वहां खड़ेथे मारते थे। मैं इसका मतलब कुछ भी समझ न सका। मालूम होता है कि उन लोगों का मन विचारमें ऐसा निमग्न रहता कि चेत कराये विना वह सब न कुछ सुन सकते हैं और न कुछ बोल सकते हैं। इसी वास्ते बड़े आदमी लोग चिताये जानेके लिये एक एक कमची बरदार नौकर रखते हैं। जहां वह जाते हैं कमची बरदारोंको साथ ले जाते हैं। जब दो चार आदमी इकट्ठे होते हैं तो कमची बरदार लोग बोलने वालेके मुंह पर, सुननेवालेके कानों पर और देखनेवालोंकी आंखों पर कमची जमा कर उनका ध्यान भङ्ग करा देते हैं तब वह लोग आपसमें बातचीत करते हैं अन्यथा नहीं कर सकते। जब बाबू साहब लोग रास्तेमें चलते हैं तब भी ध्यानमें नेत्र बन्द रहते हैं अगर नेत्रों पर तड़ातड़ कमचियां पड़ती न चलें तो वह जरूर खम्भोंसे टकरा जायंगे और गलियोंमें दूसरोंको धक्का देकर गिरा देंगे या आपही धक्का खाकर नालियोंमें गिर पड़ेंगे।

जीनेकी राह लोग मुझे धुर ऊपर लेगये। वहां राजमहलकी तरफ लेचले। मार्गमें वह लोग कई बार मुझे भूल गये—किस कामके लिये जातेहैं सो सब भूल गये थे। जब कमचियां पड़तीं तो होशमें आकर फिर आगे बढ़ते थे। बस इसीसे पाठक समझलें कि वह सब कैसे ध्यानी थे।

आखिर हम लोग राजमन्दिरमें पहुँचे। दरबार लगा हुआ था। महाराज सिंहासन पर विराजमान और अगल बगलमें सुनोतन्न मन्त्रीगण डटे हुए थे। सामने बड़ीसी एक मेज थी जिस पर भूगोलक (ग्लोब), चक्र (स्फीअर) तथा गणित सम्बन्धी सर्व प्रकारके यन्त्र रक्खे थे। हम लोगोंका पहुंचना महाराजको कुछ भी मालूम नहीं हुआ क्योंकि वह उस समय एक कठिन प्रश्न हल कर रहेथे। एक घण्टेमें उनका ध्यान टूटा। हम लोग अब तक चुपचाप खड़े थे। महाराजके दोनों ओर दो छोकरे कमचियां लिये खड़े थे। जब महाराज प्रश्न हल कर चुके तब एकने मुंह पर और दूसरेने दायें कानपर धीरेसे कमचियां जमाई। जैसे कोई नींदसे अचानक उठता है वैसेही आप चौंक उठे। मुझे तथा और सब लोगोंको देखकर उन्हें स्मरण हुआ क्योंकि मेरे आनेकी सूचना पहलेही देदी गईथी। महाराज कुछ बोले इतनेमें एक छोकरेने आकर मेरे दाहिने कान पर कमची फटकारी। मैंने इशारेसे कह दिया कि मेरे लिये इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है। बस महाराज तथा दरबारियोंकी नजरोंमें उसी घड़ीसे मैं बहुत हलका होगया। महाराजने बहुतसे प्रश्न किये। मैंने भी जितनी भाषाएं जानता था सबमें जवाब दिया। जब कोई किसीकी बात न समझ सका तो महाराजकी आज्ञासे मैं एक कमरेमें भेजा गया जहां दो नौकर पहलेहीसे सेवा टहलके लिये हाजिर थे। महाराजका अतिथि अभ्यागतका आदर सत्कार करनेमें अपने पुरुषोंसे अधिक नाम है। भोजनकी सब चीजें लाई गईं। उन चार मन्त्रियोंने जिन्हें महाराजके बहुत निकट खड़े देखा था मेरे साथ भोजन करके मेरा सम्मान किया। सामग्रियां दो प्रकार

की थीं। हर एकमें तीन तीन रकाबियां थीं। एकमें तो चौपायों के मांस थे जो रेखागणितके चित्रोंकेसे बने थे और दूसरेमें पक्षियों के, जो बाजोंके आकारके थे। खानसामा लोग जो रोटियां काट काटकर देते थे सो भी गणित सम्बन्धी चित्रोंके रूपमें थीं।

भोजनके समय मैंने सङ्केतसे कई चीजोंके नाम पूछे। उन्होंने सहर्ष अपनी भाषामें सबके नाम बताये। मैंने चट सबको याद कर लिया। फिर रोटी वगैरह जो दरकार होती सो मांग लेता था। पर एक बात यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि भोजन करनेके समय भी उन्हें कमचियां खानी पड़ी थीं।

खाने पीनेके बाद सब अपने अपने ठिकाने चले गये। महाराजके आज्ञानुसार एक मनुष्य कामचोबरदार समेत आया। वह अपने सङ्ग कलम दावात, कागज और दो चार किताबें भी लाया था। इशारेमें उसने जो कुछ समझाया उससे यही प्रगट हुआ कि वह मुझे वहांकी भाषा सिखानेके लिये आया है। चार घंटे तक मैं उसके साथ बैठा—इसी बीचमें मैंने बहुतसे शब्द और उनके अर्थ अङ्गरेजीमें लिख लिये थे। छोटे छोटे कई वाक्य भी फुर्तीसे याद करलिये थे। शिक्षक महाशय नौकरसे कभी कुछ लानेके लिये, कभी बैठने, कभी सलाम करने कभी घूमने और कभी खड़े होनेके लिये कहते थे और वह वही करता जाता था। उन सब शब्दोंको अर्थ समेत मैं कागज पर लिखता जाता था। शिक्षकने एक पोथी मेंसे चन्द्र, सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र, राशिचक्र, कटिबन्ध, चक्रमण्डल प्रभृति अनेक पदार्थकी तसवीरें दिखाई थीं। बाजोंके नाम और विवरण तथा उनके बजानेके ढङ्ग भी उसने बताये थे। उसके चले जाने पर मैंने सब शब्द और उनके अर्थोंको अक्षरानुक्रमसे लिख डाला। बस इस तरह बहुत थोड़े दिनोंमें अपनी तीव्र स्मरण शक्तिके प्रतापसे वहांकी भाषा कुछ कुछ सीख गया।

मेरे कपड़े सब फट कर खराब होगये थे। इसलिये दरजी बुलाया गया। इसकी काट छांट और नाप बिलकुल अनूठी थी।

एक यन्त्रसे पहले उसने मेरी ऊंचाई नापी फिर कागज पर मेरे शरीरका नक्शा बनाया। छटे दिन कपड़े तय्यारकर लेआया जो हिसाबमें भूल होजानेके कारण निपट कुढङ्ग, और बदकताथे। ऐसी गलतियां दर्जियोंसे बहुधा हुआ करती थीं और वह सब (कपड़े सिलानेवाले) भी इन भूलोंकी उतनी परवाह नहीं करते थे बस इसीसे मुझे भी कुछ अफसोस नहीं हुआ।

कपड़े फटे थे और तबीयत भी कुछ खराब होगई थी इससे मैं कई दिन तक घरसे बाहर नहीं निकला। इन छः दिनोंमें शब्दकोषको बहुत बड़ा कर लिया था। इसी हेतु फिर जो दरबारमें गया तो महाराजकी बहुतसी बातोंको मैंने समझा और टूटफूटे कुछ जवाब भी दिया था। महाराजने आज्ञा दी कि अब यह द्वीप ईशानकोनसे होता हुआ शहर "लगाडो" के ठीक ऊपर पहुंचे। महाराजके पृथ्वीस्थित राज्यकी राजधानीका नाम "लगाडो" है। वह यहांसे २७० मील दूर था। वहां तक पहुंचनेमें साढ़े चार दिन लगे। आकाशमें इसका चलना कुछ भी मालूम नहीं होता था। लगाडो पहुंचनेके दूसरे दिन सवेरे ग्यारह बजे स्वयं महाराज और उनके परिजन, राजसभासद, राजकर्म्मचारी प्रभृति सब साज बाज मिला कर लगे गाने और बजाने। तीन घंटे तक लगातार सबने खूब गाया बजाया। उन लोगोंने क्या गाया बजाया सो मेरी समझमें कुछ न आया। लेकिन कान जरूर बहरे होगये थे। शिक्षक महाशयसे पूछा तो उन्होंने सब बातें समझा दीं।

रास्तेमें कई शहर और गावोंके ऊपर प्रजाकी दरखास्त लेनेके वास्ते यह द्वीप खड़ा हुआ। रस्सियां नीचे लटका दी जाती थीं उन्हींमें प्रजागण अपनी अपनी दरखास्तें बांध देते थे और वह ऊपर खेंचली जाती थीं। कभी कभी खाने पीनेकी चीजें भी चरखीके द्वारा ऊपर खेंचली जाती थीं।

वहांकी भाषाकी गणित और सङ्गीत शास्त्रोंसे बहुत कुछ सम्बन्ध



नं० १०

तीन घंटेतक लगातार सबने खूब गाया बजाया।

पृष्ठ १३४

है बल्कि यों कहना चाहिये कि यह शास्त्रही भाषाके प्राण हैं। गणित तो मैं जानताही था और सङ्गीतसे भी अनभिज्ञ न था अत एव अनायासही वहांकी भाषा मैं सीख गया था।

वहांके मकान बड़े कुढङ्गे होते हैं। न दीवारें समान होतीं और न कोठियां दुरुस्त होती हैं। इसका कारण यह है कि वह लोग कार्य्यकर ज्यामितिको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और उसे अत्यन्त तुच्छ समझते हैं। गणित और सङ्गीतमें वह लोग बड़े पर और कामोंमें निरे अनाड़ी, और बेशऊर होते हैं। बक-वादी अव्वल दरजेके हैं हार कभी मानतेही नहीं। कल्पना विवे-चना और आविष्क्रिया तो जानतेही नहीं अथवा यों कहिये कि यह सब शब्द उनकी भाषाहीमें नहीं हैं। बस जो कुछ पण्डि-ताई है सो गाने बजाने और हिसाब बनानेमें। ज्योतिष पर बहुतों का विश्वास है पर सबके सामने उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

यह वक्रग्रीव सदैव चिन्तामें मग्न रहते हैं। एक छिनका भी विराम इनके चित्तको नहीं होता। कुछ न कुछ यह लोग सदा विचाराही करते हैं। पर इनके इस विचारसे शेष जीवोंका कुछ बनता बिगड़ता नहीं। आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रोंका परिवर्त्तन होना ही इनकी चिन्ताका मूल है। इसी परिवर्त्तनसे यह भयकी आशङ्का करते हैं। इनका कथन है कि सूर्य्य प्रतिदिन पृथ्वीकी ओर बढ़ा आता है सो एक न एक दिन यह पृथ्वी सूर्य्यमें लीन होजायगी। कुछ दिनोंमें सूर्य्य भी आपही आप धुन्धला होकर जगत्को प्रका-शित न कर सकेगा। गत धूमकेतुकी चपेटमें यह पृथ्वी आगई थी जरा बच गई नहीं तो वहीं भस्म होजाती। अब १३० वर्षके बाद फिर एक पुच्छलतारा उदय होगा। सम्भवतः वह पृथ्वी का नाश अवश्य करेगा। क्योंकि वह धूमकेतु अपनी कक्षामें घूमता सूर्य्यके कुछ सन्निकट आजायगा तो उसमें जलते हुए लोहेसे भी दस हजार गुनी अधिक गर्म्मी होजायगी। उसकी जलती हुई पूंछ एक लाख चौदह मील लम्बी होगी। अगर कहीं उस धूमकेतुसे

एक लाख मील दूरीके अन्दर भी पृथ्वी आगई तो इसके जलबलके खाक होजानेमें कुछ भी देर नहीं लगेगी। सूर्य्यदेव भी रोज अपनी किरणें खर्च किये जातेहैं बढ़ानेकी कुछ चेष्टा करते नहीं। आखिर सब किरणें खर्च हो जायंगी तो विचारे तेजहीन हो जायंगे और किसी कामके न रहेंगे। फिर पृथ्वी प्रभृति जितने ग्रह नक्षत्र दिनकरकी कृपासे देदीप्यमान होते हैं वह सभी नष्ट भ्रष्ट होजायंगे।

इन सब विपदोंको विचार कर वह सब ऐसे व्याकुल होगये हैं कि रातको अच्छी तरह सोते भी नहीं और न ग्रहस्थीका कुछ सुखही अनुभव कर सकते हैं। चिन्ताहीमें सारा समय व्यतीत होता है। प्रातःकाल जब किसी मित्रसे भेंट होती है तो वह पहले आपसमें भास्कर भगवानहीकी राजी खुशी पूछते हैं। उगने डूबनेके समय उनकी कैसी दशा थी। इस आनेवाली विपद अर्थात् धूमकेतुको टक्करसे बचनेकी कुछ आशा है या नहीं? अगर है तो किस उपायसे इत्यादि बातेंही परस्पर होती हैं। हमारे यहां लड़के रातको जिस प्रकार चावसे मगर डरते हुए भूत प्रेत पिशाचोंकी कहानियां सुन कर प्रसन्न होते हैं पर डरके मारे सोनेके लिये नहीं जाते हैं सूर्य्यादिकी बातें सुन कर वहांवालोंको भी ठीक वही दशा होजाती है।

इस द्वीपकी स्त्रियां बड़ीही चञ्चल होती हैं। पतिसे तो घृणा पर विदेशी जारोंसे प्रेम अत्यन्त प्रसन्नतासे करती हैं। अनेक विदेशी नीचे पृथ्वीसे सरकारी कामसे अथवा अपने कामसे आया करते हैं। इन्हींको स्त्रियां जार बनाती हैं। क्या नीच क्या ऊंच सबके घरकी यही दशा है। पतिराम सदा विचारमें मग्न रहते हैं और यह सब मजेमें माल उड़ाती हैं। अगर कहीं बगलमें कमचियां न हुईं और हाथमें कागज पेनसिल मिल गई तो फिर क्या है? स्त्रियां जारके साथ अटखेलियां करतीं हाथसे हाथ मिलाये सामनेसे निकल जायं तो भी पुरुषोंको कुछ खबर नहीं। इसीसे यह सब बहुत निर्भय और स्वच्छन्द होकर व्यभिचार करती हैं।

यद्यपि यह द्वीप मैं समझता हूं संसार भरके सब स्थानोंसे मनोहर और रम्य है—घर द्वार भी सुन्दर और बढ़िया हैं स्त्रियां मन माने ढङ्गसे यहां आनन्द पूर्वक रह सकती हैं—इनको बड़ी स्वाधीनता रहती है जो चाहें सो करें तथापि इनका मन यहां नहीं लगता है। दुनियाकी सैर करने तथा राजधानीकी बहार देखने के वास्ते तरसा करती हैं। इसका एक कारण है। वह सब यहां लाकर कैद करदी जाती हैं। फिर महाराजकी विशेष आज्ञाके बिना नीचे नहीं जासकतीं और यह आज्ञा भी बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे प्राप्त होती है क्योंकि प्रायः देखा गया है कि जब कभी किसी भले घरकी स्त्रियां नीचे भूमि पर जाती हैं तो फिर लौटनेका नाम नहीं लेतीं। समझाने बुझानेसे भी कुछ फल नहीं निकलता है। वहांवाले कहते थे कि बड़े घरकी एक स्त्रीसे जिसके कई लड़के भी थे प्रधान मन्त्रीका व्याह हुआ। वह बीमारीके मिससे एक बार नीचे उतर गई। प्रधान मन्त्री बहुत सुन्दर और शौकीन थे। उसका बहुत लाड़ प्यार करते थे। उनका घर भी बहुत बढ़िया था। मजेमें राजसी ठाठसे वह रहते थे। इतना होने पर भी उनकी स्त्री नीचे जाकर फिर नहीं लौटी। कई महीने तक गुम रही। आखिर महाराजने ढुंढ़वाया तो पता लगा कि वह एक मड़ैयामें फटी चिटी साड़ी पहने एक कुरूप ग्वालेके साथ रहती है जो उसे नित्य पीटता है। उसके लानेके लिये लोग गये पर वह आनेको सहमत नहीं होती थी। खैर, वह लाई गई। मन्त्री साहबने भी बिना कुछ कहे सुने उसे ग्रहण किया पर वह निगोड़ी क्यों रहने लगी थी? जो कुछ घरमें गहने जेवर थे लेकर फिर उसी ग्वालेके पास जापहुंची। तबसे फिर उसका कुछ हाल नहीं मिला।

पाठकोंको यह घटना विचित्र होनेके बदले साधारण मालूम पड़ती होगी क्योंकि युरोप या विलायतमें ऐसी घटना प्रायः हुआ ही करती है। पर उन्हें यह जानना चाहिये कि स्त्रियोंका ओछा स्वभाव सर्वत्र एक होता है। इनका स्वभावही चञ्चल है।

लगभग एक महीनेमें उनकी भाषा में अच्छी तरह सीख गया। अब जब कभी दरबार जाता तो उसी भाषामें बोलता और महाराज जो कुछ कहते सो समझता भी था। जिन सब देशोंमें घूम आया उन सबकी राजनीति, इतिहास, धर्म्म या आचार व्यवहार के बारेमें महाराजने कभी कुछ नहीं पूछा और जो कुछ पूछा भी सो केवल गणितके विषयमें। मैंने इस विषयमें जो कुछ कहा सो आपने कमचियां खा खा कर सुना था।

तृतीय परिच्छेद।

महाराजकी आज्ञा ले मैंने द्वीपकी खूब सैर की। साथमें शिक्षक महाशय भी थे। असलमें मैं यही जानना चाहता था कि इस द्वीपकी बहुरङ्गी गति किस प्रकारसे होती है सो मैंने जान लिया अब पाठकोंको इसका भेद बताता हूं।

इस उड्डीयमान द्वीपका आकार ठीक गोल है। व्यास ७८३७ गज अर्थात् करीब साढ़े चार मील और क्षेत्रफल तीस हजार बीघेहैं। यह तीनसौ गज मोटाहै। नीचेसे इसकी पेंदी चौरस तथा हीरे जैसे कठिन पत्थरकी बनी हुई मालूम होती है और ऊंचीभी दोसौ गजके लगभग है। इसके ऊपर कई धातुओंके पत्तर सिलसिलेसे चढ़े हुए हैं। सबके ऊपर बढ़िया मट्टीका दस बारह फुट गहरा अस्तर है। परिधिसे केन्द्र पर्य्यन्त ऊपरका तल ढालुआ था इसीसे बरसातका सब पानी सिमट कर नालोंकी राहसे बीचमें आता है वहांसे चार बड़े बड़े हौजोंमें बंट जाता है जिनका घेरा आधी आधी मील और जो केन्द्रसे दोसौ गजके फासले पर हैं। हौजोंके पानीको दिनमें सूर्य्य सोख लेताहै इसीसे उनमें पानी बढ़ने नहीं पाता है। इसके सिवा महाराज अपने द्वीपको बादलोंसे भी ऊपर लेजा सकते हैं। ऊपर लेजानेसे फिर पानी बुन्दीका कुछ डर नहीं रहताहै। प्राकृततत्व वेत्तागण कहतेहैं कि बरसाऊ बादल दो मीलसे ऊपर नहीं जाता है सो वहां दो मीलसे ऊपर कभी बादल नहीं देखा गया है।

इस द्वीपके केन्द्रस्थलमें एक गुफा है जिसका व्यास कोई पचास गजहै। इसी राहसे ज्योतिषीगण एक बड़े गुम्बजमें जातेहैं। अतएव इसका नाम ज्योतिषी कन्दरा पड़ाहै। यह गुम्बज पत्थरवाले तलसे सौगज नीचेहै। यहां बैठकर ज्योतिषी लोग ग्रहोंका विचार करतेहैं। इसमें बीस लेम्प बराबर जला करतेहैं जो हीरेके प्रतिबिम्ब पड़नेसे हर एक तरफ खूब तेज रोशनी डालते हैं। यहां दूरवीचण प्रभृति बहुतसे ज्योतिष सम्बन्धी यन्त्र रखे हुएहैं। सबसे अद्भुत वस्तु तो एक बड़ा भारी चुम्बक पत्थरथा जिसके जोरसे यह द्वीप चलताथा। इस की बनावट कपड़े बुननेके करगहको सी थी। यह लम्बा छ: गज और मोटा कमसे कम तीन गजथा। यह चुम्बक हीरेके एक धुरेके सहारे घूमता था। इसके एक ओर खेंचनेकी और दूसरी ओर हटानेकी शक्ति थी। जब इस चुम्बकका वह सिरा जिसमें खेंचनेकी शक्ति थी पृथ्वीकी तरफ कर दिया जाता तो द्वीप नीचे उतरता था और जब हटानेवाली शक्तिका सिरा नीचेकी ओर किया जाता तो वह ऊपर चढ़ता था। चार मीलसे अधिक ऊंचा वह नहीं चढ़ता था। पण्डितोंने निश्चय किया है कि चार मीलसे ऊपर चुम्बककी शक्तिया काम नहीं करती है। जब यह चुम्बक तिरछा किया जाता था तो इसकी गतिभी तिरछी होजाती थी। इसी तिरछी गतिके द्वारा यह एक जगहसे दूसरी जगह पहुँच जाता। जिस समय चुम्बक दायें बायें लम्बा पड़ा रहता उस समय द्वीपकी भी गति रुक जाती थी। मतलब यह कि चुम्बकके सहारेही यह चढ़ उतर ठहर और एक ठौरसे दूसरी ठौर जा सकता था। भूमिस्थ राज्य के बाहर यह द्वीप नहीं जा सकता था क्योंकि पृथ्वीके भीतर जो सब धातु चुम्बक पर असर डालते हैं सो इस राज्यको छोड़ और कहीं नहीं हैं। उन देशोंको जो चुम्बककी शक्तियोंके अन्तर्गत हैं महाराज सहजमें अधिकृत कर सकते हैं।

यह चुम्बक कई ज्योतिषियोंके अधिकारमें रहता है जो महाराजके आज्ञानुसार इसको इधर उधर घुमाया करते हैं। इन लोगों

के जीवनका अधिक भाग दूरबीनसे नक्षत्रोंके देखनेहीमें व्यतीत होता है। हम लोगोंकी दूरबीनसे इनकी दूरबीन कहीं बढ़ चढ़ के है। इनकी बड़ीसे बड़ी दूरबीन तीन फुटसे अधिक लम्बी नहीं होती लेकिन काममें सौ फुट लम्बीके कान काटती है। इसीलिये यह युरोपीय ज्योतिषियोंकी अपेक्षा आविष्कार करनेमें बहुत आगे बढ़े हैं। यह लोग दस हजार अचल ताराओंकी सूची बना चुके हैं लेकिन हमारे यहां इसकी तिहाई संख्या भी नहीं है। इन्होंने दो उपग्रह और निकाले हैं जो मङ्गलके आस पास घूमते हैं।

इन लोगोंने तिरानवे पुच्छल तारे और निकाले हैं और उनकी चालें भी शोध कर बहुत ठीक करदी हैं। अगर यह बात सत्य है जैसा कि वह लोग कहते हैं तो सर्वसाधारणमें इसका प्रचार हो जाना चाहिये। धूमकेतुका पूर्ण ज्ञान किसीके है भी नहीं। इसके प्रचार होजानेसे ज्योतिषका यह अङ्ग भी पूरा होजायगा।

महाराज यदि अपनी मन्त्रिसभासे मिलकर नीतिके अनुसार राज्य करते तो जगतमें सबसे बढ़ कर राजा होजाते पर इसमें दो अड़चलें आपड़ी हैं। एक तो महाराज रहते आकाशमें और प्रजा भूमि पर। दूसरे मन्त्रियोंका पद अनिश्चित है इसीलिये देशकी सेवा करना कोई नहीं चाहता है।

अगर किसी शहरमें अराजकता वा विरोध फैले अथवा लोग मामूली कर देना बन्द करदें तो महाराज दोही प्रकारसे उन्हें अपने अधीन करलेते हैं। पहला और सहज उपाय तो यह है कि जो शहर विद्रोही होता चट द्वीप उस पर मंड़लाने लगता सूर्यके प्रकाशको रोक देता है। फिर क्या है दुर्भिक्ष और रोगादि उस शहर पर चढ़ दौड़ते हैं। और यदि कहीं भारी अपराध हुआ तो ऊपरसे पत्थरोंकी दृष्टि होती है। लोग तो खैर किसी तरह खोह कन्दरामें लुक छिप कर प्राण बचा लेते हैं पर घर बार तो एक दमही चौपट होजाते हैं। इस पर भी यदि विद्रोह शान्त न हुआ तो अन्तिम उपाय किया जाता है अर्थात्

द्वीप गिर कर गावोंको नष्ट भ्रष्ट कर देता है। परन्तु यह दण्ड बहुत कम काममें लाया जाता है क्योंकि इससे राज्यका बहुत नुकसान होता है।

अत्यन्त आवश्यकता हुए बिना यह दण्ड काममें नहीं लाया जाता है। मन्त्रीगण भी जल्दी इस दण्डकी व्यवस्था नहीं करते क्योंकि इन सबकी सब भूमि सम्पत्तियां नीचेही रहती हैं। सो इस दण्डसे इनकी भी बहुत हानि होती है। इसके अतिरिक्त नीचे भूमि पर बड़े बड़े पत्थर हैं। उनमें ठोकर लगनेसे द्वीपकी पेंदीके फटने और उसमें आग लगनेकी पूरी सम्भावना है। लोहे और पत्थरके संघर्षणसे अग्नि उत्पन्न होती है। यह सब कोई जानता है। इसीलिये महाराज भी जल्दी यह दण्ड किसीको नहीं देते। अगर देते भी हैं तो बहुत चौकसीके साथ धीरे धीरे द्वीप नीचे गिराया जाता है।

इस राज्यके नियमके अनुसार राजा तथा बड़े और मझले राजकुमार द्वीपके बाहर नहीं जाने पाते हैं और महारानी भी बालिग हुए बिना नहीं जा सकती हैं।

चतुर्थ परिच्छेद।

यद्यपि मैं यह नहीं कह सकता कि मेरा वहां अनादर हुआ, पर तथापि इतना अवश्य कहूँगा कि वहांवाले मेरी कुछ इतनी परवाह नहीं करते तथा मुझे घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। उन लोगों को गणित और सङ्गीतके सिवा दूसरी विद्या जाननेका कुछ भी चाव न था। और इन दोनोंमें उनकी अपेक्षा मेरी थोड़ी योग्यता थी। इसीसे उनकी दृष्टिमें मैं अति तुच्छ था।

जो कुछ देखनेके योग्य वहां था मैंने सब देख लिया। पीछे जी उदास हुआ। मन लगानेसे भी नहीं लगता था। यही जीमें आता कि कब यहांसे निकल भागूं। वह सब सदा विचारहीमें डूबे रहते थे। फिर तबीयत लगे कैसे? ऐसी भद्दी सङ्गत मुझे

कभी नहीं मिली थी। मैं वहां दो महीने रहा। केवल औरतोंसे, व्यापारियोंसे, कमची वरदारोंसे और दामन वरदारोंसेही बात चीत कर जी बहलाता था क्योंकि इन विचारोंको विचारकी बीमारी न थो। जो कुछ मैं पूछता उसका यथोचित उत्तर इन्हीं लोगोंसे मुझे मिलता था।

दरबारमें एक सरदार था। महाराजसे उसकी कुछ नातेदारी भी थी और यही सबब था कि लोग उसका आदर करते थे। पर साथही इसके सारा संसार उसे मूर्ख और बेवकूफ समझता था। उसने राज्यकी बड़ी बड़ी सेवाएंकी थीं, उसकी समझ बूझ भी अच्छी थी और आदमी भी सच्चा ईमानदार था। लेकिन एक बड़ी भारी कसर उसमें यह थी कि वह ताल सुर कुछ भी नहीं जानता था। उसके बेतालेपनकी कई बार शिकायत भी हो चुकी है। अध्यापकगण भी उससे तङ्ग आगये। सहजसे सहज गणितका प्रश्न भी वह कठिनाईसे समझ सकता। जो कुछ हो मुझ पर बड़ी दया करता था। अकसर मेरे यहां आता और युरोप तथा उन देशोंकी जहां जहां मैं गया हूँ रीति व्यवहार, विद्या बुद्धि, राजनीतिके विषयमें पूछता था। जो कुछ मैं कहता उसे ध्यानसे सुनता और कहीं कहीं उचित राय भी देता था। उसके साथ भी दो कमचीवाले थे जिनसे वह राज दरबार या भारी भारी जगहोंके सिवा और कहीं काम नहीं लेताथा। जब मुझसे बात चीत करता तब उन्हें दूर भगा देताथा। इसी भलेमानसकी छपासे मेरा छुटकारा हुआ। इसीने वह सुनके महाराजसे अनुमति दिलाई थी।

१६ वीं फरवरीको मैं महाराजसे विदा हुआ। आपने दो सौ पौण्डकी चीजें बिदाईमें दी थीं तथा मेरे मित्रने इतनीही बल्कि इससे अधिक दीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने लगाडो (राजधानी) निवासी अपने दोस्तके नामका एक चिट्ठी भी मुझे दी थी। जब उड़न टापू राजधानीसे दो मीलके फासले पर एक पहाड़ीके ऊपर ठहरा तो मैं उसी प्रकारसे जैसे चढ़ा था उतार दिया गया।

उस देशका नाम जो उड्डीयमान द्वीपके नरेशके आधीन है—"बलनीबरबी" है और राजधानीका लगाडो है सो मैं लिखही चुका हूँ। जब मैं पुनः पृथ्वी पर पहुँचा तो जीमें जी आया। मैं वे परवाईके साथ राजधानीकी ओर चल पड़ा। मेरी पोशाक उसी देशकी सी थी और बोली भी वहांकी सीखही गया था अतएव निडर होकर जाने लगा। जिस भलेमानसके नामकी चिट्ठी थी उसके मकानका पता बहुत जल्द लग गया। उसको चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ़ कर उसने मेरा आगत स्वागत किया। उसका नाम मुनोडी था मेरे रहनेके लिये उसने एक कमरा अलग खाली कर दिया और मेरी बड़ी खातिरदारी की।

दूसरे दिन सवेरे मुनोडी रथ पर बिठा कर शहरकी सैर कराने को लेचला। यह शहर लण्डनका आधा था। मकान सब विचित्र मगर बेमरम्मत थे। तमाम उदासी छाई थी। सड़कों पर आदमी बड़ी तेजीसे चलते थे जो देखनेमें वहशी मालूम पड़ते थे। नेत्र स्थिर थे, मुख विषण्ण थे। और कपड़े फटे चिटे थे। हम लोग शहरका फाटक पार करके गांवमें घुसे। लग भग तीन मीलके चले गये। वहां देखा कि बहुतसे मजदूर रङ्ग विरङ्ग हथियार लिये जमीन पर कुछ कर रहे हैं पर क्या कर रहे हैं सो समझमें न आया। खेतोंमें नाज या घासके चिन्ह भी दिखाई न पड़े लेकिन मट्टी बहुत बढ़िया नजर आई। नगर और गांव दोनों जगहों की इस अनोखी अवस्थाको देख मुझसे न रहा गया। मैं मुनोडी से पूछही बैठा "महाशय! कृपा कर बताइये यह लोग क्या कर रहे हैं? गलियोंमें खेतोंमें तमाम यह लोग जीजानसे काम कर रहे हैं पर नतीजा कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। ऐसी बुरी तरह से जुती हुई जमीन, ऐसे उजाड़ और कुढङ्गे मकान और ऐसे मनुष्य जिनके चेहरेहीसे दीनता और दरिद्रता टपकती है मैंने कहीं नहीं देखे।"

यह लार्ड मुनोडी उच्च श्रेणीका मनुष्य था। कुछ दिन पहले

यह लगाडोका गवर्नर था। लेकिन मन्त्रियोंके षड़यन्त्रसे अयोग्य समझा जाकर यह पदच्युत हुआ। जो हो महाराज अब भी इस पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अथच बुद्धिहीन समझते हैं।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर केवल यही कहा "अभी तो आपको आये थोड़ेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये सहिये तब सब आपही मालूम होजायगा। यह आप जानतेही हैं कि जाति जातिकी जुदी जुदी चालहै।" मैं भी सुन कर चुप रहा। जब डेरे पर लौट कर आए तो उसने पूछा—"कहिये यह मेरे मकान सब कैसे हैं? इनमें क्या बेहूदापन है? मेरे आदमियोंकी पोशाकें या सूरत शकलें कैसी हैं?" मैंने जवाब दिया "दरिद्रता और मूर्खताके कारण यहांवालोंमें जो दोष हैं उनसे आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे बचे हैं।" सचमुच इसके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुढङ्ग थीं। इस पर वह बोला—"यहांसे बीस मील दूर मेरी जमीदारी है अगर आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती हैं।" मैंने वहां जाना मञ्जूर किया। बस दूसरेही दिन हम लोग उधर को रवाने हुए।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते बोते हैं सो सब रास्ते भर यह दिखलाता जाता था पर दो एक जगहको छोड़ कहीं भी नाजकी बालें या घासकी पत्तियां नजर नहीं आईं। तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया। हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे। पासही पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे। कहीं अंगूरकी टट्टियां, कहीं नाजकी क्यारियां और कहीं पशुओंके चरनेके हरे भरे मैदान की अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी। इससे बढ़ कर रम्यस्थान कभी देखा होगा सो स्मरण नहीं। मुनोडीने कहा—"बस यहींसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है।

मेरे इस प्रबन्धको देख यहांवाले हंसते और ठट्ठा मारते हैं और मुझे नितान्त दुर्व्वल चित्त तथा विलासी समझते हैं।"

आखिर हम लोग मुनोडीके महलमें पहुंचे। सचमुच यह महल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था। फौआरे, बगीचे, सड़कें, रविशें और कुञ्जें आदि बहुत सुन्दर बनी हुई थीं। मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। व्यालूके बाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब मुनोडी बोला—"अफसोस है! अब यह सब मकान तोड़ कर मुझे नये ढङ्गसे बनाना पड़ेगा। बाग बगीचोंको फिरसे लगाना पड़ेगा। और अपनी प्रजाओंको भी यही आज्ञा देनी पड़ेगी क्योंकि मेरे घमण्डकी, अनोखेपनकी, मूर्खताकी और ओछेपनकी तमाम निन्दा है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ असन्तुष्ट हैं। अगर सबको फिरसे न बनाऊंगा तो महाराज मुझसे अधिक रुष्ट हो जायंगे।"

मुनोडीने और भी बहुतसी बातें कही थीं जिनका सारांश यह है। आगे जिस उड़नेवाले टापूका जिकर आचुका है उसका नाम लपूटा है। लग भग चालीस साल हुए होंगे कि कुछ लोग कामसे या योंहीं सैरके लिये ऊपर लपूटा गये थे। पांच महीनेके बाद जब वह हवाई मुल्कसे वापिस आये तो उनके रङ्ग ढङ्ग बिलकुल बदले हुए थे। गणितशास्त्रका ज्ञान तो कुछ ऐसाही वैसा हुआ परन्तु चित्तमें चञ्चलता बहुत आगई थी। यह लोग नीचे आकर यहांकी हर बातको बुरी और घृणित समझने लगे। शिल्प, विज्ञान, भाषा और कल कांटोंको नये सांचेमें ढालनेके लिये जी जानसे लग पड़े। फिर लगाडोमें सुधारकोंकी पाठशाला स्थापित करनेके वास्ते महाराजसे परवाना भी लेआये। इसकी चर्चा फिर इतनी बढ़ी कि हर एक नगरमें पाठशाला खुल गई। अब छोटा से छोटा शहर भी विद्यालयहीन नहीं। इन विद्यालयोंमें अध्यापकगण खेती तथा मकान बनानेके नये नये कायदे और तरीके

निकालनेकी चेष्टा करतेहैं, सौदागरीके लिये नये नये औजार ईजाद करते हैं जिनसे दस मनुष्यका काम एकही करले और बड़ीसे बड़ी इमारत भी एकही हफ्तेमें तय्यार होजाय और बिना मरम्मत किये सदा बनी रहे। हर मौसममें फल फला करें तथा उनकी गिनती भी सौगुनी बढ़ जाय इत्यादि इत्यादि। पर कोई भी बात आज तक पूरी नहीं हुई। नतीजा यह निकला कि सारा देश उजाड़ होगया, मकान खण्डहर होगये, और मनुष्य सब दरिद्र अन्न वस्त्रहीन होगये! इतने पर भी सुधारकगण निराश नहीं हुए हैं। और भी पचास गुने साहस और उत्साहसे अपने उद्देश्य साधनमें लगे हैं। लेकिन मुनोडीको यह सब पसन्द नहीं है। वह वही अपनी पुरानी चाल पसन्द करता है। जिस घरमें उसके पुरखा लोग रहते आये हैं उसीमें वह अपना दिन काटता है। और भी दो चार बड़े आदमी इसके मतके हैं। यह सभी देश शत्रु और मूर्ख समझे जाते हैं। यह लोग अपनी अपनी भलाई और आराम देखते हैं देशकी उन्नति नहीं चाहते हैं यही इन पर दोष लगाया जाता है।

अन्तमें लार्ड मुनोडी फिर यों कहने लगा—यहांसे तीन मील दूर एक पहाड़की बगलमें पनचक्कीका पुराना खण्डहर अब तक मौजूद है। यह नदीकी धारसे चलाई जाती थी। इससे मेरा और मेरी अनेक प्रजाका मजेमें गुजारा होता था। सात साल की बात है कि इन सुधारकोंने इस पुरानी पनचक्कीको तोड़ कर एक नई बनवानेका तथा पानीके लिये एक नहर खुदवानेका प्रस्ताव किया। उस समय उन लोगोंने इस काममें मुझे बहुतसे फायदे दिखलाये। कहा नल और इञ्जिनके द्वारा नहरसे पानी ऊपर चढ़ाया जायगा। हवा ऊंची जगह पर जलको कम्पायमान कर नीचेकी अपेक्षा उससें अधिक शक्ति उत्पादन कर सकती है। उस समय दरबारसे मेरा कुछ ऐसा मेल मिलाप भी न था और मित्रोंने भी इधर बहुत कहा सुना लाचार मैंने सुधारकोंके प्रस्तावको अङ्गी-

कार करलिया। पुरानी पनचक्की ढहवा दीगई और नईमें काम लगाया गया। कोई सौ आदमी दो बरस तक काम करते रहे पर हुआ वही ढाकके तीनों पात। सुधारकगण मेरेही मत्थे दोषका ठिकरा फोड़ कर चम्पत हुए। तब से वह लोग बात बातमें मुझ परही कटाक्ष करते हैं। अब दूसरोंको बातें बना कर फंसाते हैं पर छत कार्य्य अभी तक नहीं हुए हैं।"

कुछ दिनोंके बाद हम लोग शहर वापिस आये। सुधारकों की पाठशालाएं देखनेकी अभिलाषा हुई पर पाठशालावालोंसे मुनोडीका मेल जोल नहीं था अतएव उन्होंने अपने एक मित्रको मेरे साथ कर दिया। मैं सहर्ष विद्यालय अवलोकनको चला क्योंकि लड़काईमें मैं भी एक तरहका सुधारक था।

पञ्चम परिच्छेद।

यह विद्यालय एक बड़ी भारी इमारत नहीं है। सड़कके दोनों ओर जो जो घर पुराने पड़ते जाते हैं वही सब खरीद कर विद्यालय में मिला लिये जाते हैं। इसीसे विद्यालयके घरोंका एक सिलसिला चला गया है।

वहां पहुंचने पर विद्यालयके अधिकारीने मेरी बड़ी अभ्यर्थना की। एक दिनमें विद्यालयका अवलोकन समाप्त न होसका। कई दिन तक लगातार मैं जाता रहा। हर एक कमरेमें एकसे अधिक सुधारक थे। मैं समझता हूं पांचसौसे कम कमरोंमें मैं नहीं गया हूंगा।

पहले कमरेमें गया तो एक दुबले पतले मनुष्यको देखा जिसके हाथ मुंह काले, सिर और दाढ़ीके बाल लम्बे, रूखे और झुलसे थे। उसके कपड़े वगैरह भी काले थे। वह खीरे और ककड़ियोंसे सूर्य्यकी किरणें निकालनेके लिये आठ वर्षसे चेष्टा कर रहाथा। खीरे और ककड़ियोंको रासायनिक प्रक्रियासे शीशियोंमें अच्छी तरह बन्द करना फिर सरदीके दिनोंमें निकाल कर उनसे

हवा गर्म करनाही उसका उद्देश्य था। उसने मुझसे कहा—"आठ बरसके बाद मैं जरूर लाट साहबके बगीचेमें सूर्य्यकी किरणें पहुँचानेके योग्य हो जाऊंगा लेकिन कसर यह है कि मेरे पास पूँजी नहीं है। आप जानते हैं कि रुपयेके बिना कोई काम नहीं होता। ककड़ीकी फसल भी अच्छी नहीं होती इससे दरभी बहुत चढ़ गईहै सो आप कुछ मदद करें तो बहुत उपकार होगा।" मुनोडी पहलेहीसे जानता था कि विद्यालयवाले सबसे भीख मांगते हैं। इसी लिये उसने चलनेके समय कुछ रुपया मेरे हवाले कर दिया था। वही मैंने उसे दे दिया।

दूसरे कमरेमें घुसतेही ऐसी दुर्गन्धि आई कि मैं घबरा कर लौटने लगा। पर मेरे साथीने ऐसा करनेसे मना किया। आखिर बिना नाक मूंदेही भीतर धस पड़ा। यहांके सुधारकजी सबसे पुराने तथा बूढ़े थे। आपका मुंह तथा दाढ़ी पीली थी। हाथ और कपड़े गलीजसे भरे हुए थे। जब उनके निकट पहुंचा तो उन्होंने गले लगाया। अगर मैं जानता कि वह मुझे गले लगावेंगे तो कदापि वहां न जाता। ऐसे आदर सम्मानको दूरहीसे नमस्ते है! यह महात्मा मनुष्यकी विष्ठाका पुनः अन्न बनानेके लिये सिर मार रहे हैं। इन्हें सुधारक-समाजसे हफ्तेमें एक मटका गुह मिला करता है।

तीसरेको बर्फका बारूद बनानेमें व्यस्त देखा। अग्निको तरल बनानेके विषयमें एक पोथी भी उसने लिखी थी जिसे वह जल्द छपाना चाहता था। मैंने उस पोथीको देखा भी था।

चौथे कमरेमें एक असाधारण कारीगर था। उसने मकान बनानेकी नई प्रणाली निकाली थी कि पहले छत बना कर तब दीवार और नीव इत्यादि बनाना चाहिये। मकड़ी और मधु-मक्खियोंका उदाहरण बतला कर उसने कहा कि यह कुछ कठिन कार्य्य नहीं है।

पांचवें घरमें एक जन्मका अन्धा था। उसके कई चेले थे। यह सब भी जन्मान्ध थे। चित्रकारोंके लिये रङ्ग बनानाही

इनका काम था छूकर और सूंघ कर यह रङ्गोंको चुन लेते थे। भाग्यका दोष है कि चेलोंको तो क्या गुरु भी अपना करतब भली भांति मुझे न दिखला सके। चित्रकारोंने इन लोगोंका खूबही उत्साह बढ़ाया है।

छठे आविष्कर्त्तासे मैं बहुतही प्रसन्न हुआ। इसने हल, बैल तथा मजूरोंका खर्च बचानेके वास्ते सूअरोंसे जमीन जुतवानेका एक नया ढङ्ग निकाला है। वह यह है कि तीन बीघे जमीनमें छः छः इञ्च पर आठ इञ्च खोद कर बलूत, खिजूर, अखरोट तथा उन चीजोंको जिन्हें सूअर पसन्द करते हैं गाड़ देना फिर छः सौ या अधिक सूअर उस खेतमें छोड़ देना चाहिये। सूअर सब उन चीजों के लालचसे सारे खेतको थोड़ेही दिनोंमें खोद डालेंगे। सिर्फ यही नहीं अपने मैलेको खाद भी उसमें डालते रहेंगे। फिर मजेमें खेती करो। यह बात सत्य है कि परीक्षा करने पर खर्च और मिहनत तो ज्यादे हुई परन्तु फसल कुछ नहीं। जो हो, इसकी उन्नति करनी चाहिये।

सातवें कमरेमें पहुँचा तो वहां कुछ औरही दृश्य नजर आया। तमाम छत और दीवारोंसे मकड़ोंके जाले लटक रहे थे कहीं तिल भर भी जगह खाली न थी। आने जानेके लिये केवल एक द्वारथा। मैं ज्योंही पहुँचा उस कमरेका अधिकारी चिल्ला उठा—"जाल मत बिगाड़ना! जाल मत बिगाड़ना।" मैं जहांका तहां खड़ा होगया तब वह बोला—"देखो! दुनिया कैसी अन्धी है कि इतने पालतू मकड़े होने पर भी लोग रेशमी कीड़ेके पीछे भाग रहे हैं। यह मकड़े बुनने और कातनेमें रेशमके कीड़ेसे कहीं चढ़ बढ़के हैं। मकड़ोंको काममें लानेसे रेशमके रङ्गनेका खर्च एक दम बच सकता है। देखो! यह कैसी सुन्दर रङ्गीली मक्खियां हैं। यही मकड़ोंको खिलाई जाती हैं। इन मक्खियोंका रङ्ग जैसा होगा मकड़े जाल भी वैसाही बनावेंगे। मक्खियोंकी खूराक अभी ठीक नहीं हुई है अगर होगई तो मकड़ोंके सूत भी मजबूत और कामके

लायक हो जायंगी। गोंद, तेल आदि लसलस पदार्थही मक्खियों का उपयुक्त आहार है।

मेरे वायुगोलेकी कुछ शिकायत थी। मेरा साथी मुझे डाक्टर साहबके पास लेगया। आप इस रोगकी चिकित्सामें अच्छे नामवर पुरुष थे। आपके पास एक फुकनी जिसमें हाथीदांतका पतलासा लम्बा मुँह लगा था। इसी फुँकनीके मुँहको रोगीके मल द्वारमें आठ इञ्च घुसेड़ कर आप भीतरकी दूषित वायु खैंच लेते थे। अगर वायुगोलेका वेग प्रबल हुआ तो आप उलटी क्रिया करते अर्थात् मल द्वारकी राह बाहरकी हवा पेटमें खूब भर देते थे बस यह नई हवा दूषित वायुके सङ्ग बड़े जोरसे निकल पड़ती थी और रोगी चङ्गा होजाता था। मैंने दोनों तरहसे एक कुत्ते का इलाज करते डाक्टर साहबको देखा था। पहले उपायसे तो कुछ नतीजा निकला नहीं पर दूसरेसे कुत्तेका कामही तमाम हो गया। डाक्टर साहब उसके जिलानेके उद्योगमें लगे और हम दोनों वहांसे नौ दो ग्यारह हुए क्योंकि कुत्तेकी हवासे जी बहुत घबरा गया था।

और भी अनेक कमरे मैंने देखे जिनका वर्णन कर पाठकोंको दिक करना मैं नहीं चाहता। अब तक मैंने विद्यालयका एकही भाग देखा था। दूसरे भागमें आध्यात्मिक और वैषयिक उन्नतिके चाहनेवाले लोग थे। पहले मैं एक मुख्य व्यक्तिका जो विश्व शिल्पी कहलाता था, हाल सुनाता हूं। वह मानव जातिकी आयु बढ़ाने के लिये तीस सालसे सिर खपा रहा था। उसके इलाके दो बड़े बड़े कमरे विचित्र पदार्थोंसे भरे हुए तथा पचीस मनुष्य काम करनेवाले थे। कुछ लोग हवाको जमाकर धूनेके योग्य बनानेमें कुछ सङ्गमरमरको तकियेके लिये मुलायम करनेमें और कुछ लोग घोड़ोंको लंगड़ानेसे बचानेके लिये उनके सुमको पत्थर बनानेमें लगे हुएथे स्वयं उस्तादजी उस समय दो कामोंमें माथा लड़ा रहेथे। एक तो यह था कि भूमिमें भूसीही बोना चाहिये क्योंकि बीजत्व

भूसीहीमें है। इसे उन्होंने कई प्रकारसे सिद्ध भी किया पर मेरी समझमें कुछ न आया। दूसरा यह कि गोंद, धातु और जड़ी बूटी मिला कर एक ऐसा मरहम बने जिसके लगानेसे मेमनोंकी देह पर ऊन न निकले। वह कहता था कि थोड़ेही दिनोंमें राज्य भरमें ऊनहीन मेमने हो जायंगे।

अब हम लोग पाठशालाके उस भागमें जा पहुँचे जहां काल्पनिक विद्याके पढ़नेवाले रहते थे। जिस अध्यापकसे पहले भेंट हुई वह चालीस विद्यार्थियोंको लिये एक बड़ी कोठरीमें बैठा था। दण्ड प्रणामके बाद मेरी दृष्टि एक चौखट पर जापड़ी जो बड़ी लम्बी चौड़ी थी बल्कि यों कहना चाहिये कि जो कोठरीका ज्यादा हिस्सा घेरे हुए थी। मैं उसे गौरसे देखने लगा तो अध्यापकने कहा—"आपको आश्चर्य होता होगा कि काल्पनिक विद्याकी उन्नतिके लिये यन्त्रादिकी क्या दरकार है? पर लोग बहुत जल्द इसके लाभोंको जानेंगे। इससे सुन्दर और इससे ऊंचा विचार आज तक किसी मनुष्यके सिरमें नहीं आया था। यह सब कोई जानते हैं कि विज्ञान और शिल्प सीखनेके लिये कितना परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन मेरे इस उपायसे बहुत थोड़े समय और थोड़े खर्चमें मूर्खसे मूर्खभी बिना परिश्रम और बिना पढ़े दर्शन, काव्य, राजनीति, धर्मशास्त्र, गणित और वेदान्त विषयकी पोथियां लिख सकेगा।" इतना कह वह मुझे उस चौखटाकार यन्त्रके पास ले गया। उसके चारो ओर विद्यार्थीगण श्रेणीबद्ध खड़े थे। वह यन्त्र बीस फुट लम्बा और उतनाही चौड़ा था। कोठरीके मध्य भागमें वह रक्खा था। पतले तारके द्वारा लकड़ीके छोटे छोटे टुकड़े उसमें लगे थे। उन पर कागज चिपके हुए थे। उन कागजों पर उस देशकी भाषाके वाक्य सब लिखे हुए थे। चौखटेके चारो ओर किनारे किनारे चालीस कड़े लगे थे। अध्यापककी आज्ञा पातेही सब लड़कोंने एक एक कड़ा थाम लिया। फिर एक झटका देते ही शब्दोंकी बनावट बिलकुल बदल गई। तब अध्यापकने छत्तीस